मरकुस रचित सुसमाचार

मरकुस के अनुसार सुसमाचार (खुशी की खबर)

1 परमेश्वर के बेटे यीशु मसीह के
सुसमाचार की शुरुआत। 2 यशायाह
नबी की किताब में लिखा है कि देखो, मैं
अपने दूत को तुम से पहले भेजूँगा, जो तुम्हारे
लिये रास्ता तैयार करेगा। सुनो,
3 एक पुकारने वाले की आवाज़ जंगल में
सुनाई दे रही है कि प्रभु का रास्ता तैयार करो,
और उसकी सड़कें सीधी। यह पुकारने वाला
4 यूहन्ना आया, और वह अपराधों[a] की
माफ़ी के मनबदलाव के लिए बपतिस्मे का
ऐलान करने के साथ लोगों को यरदन नदी में
बपतिस्मा दिया करता था। 5 यहूदिया प्रान्त
और यरूशलेम में रहने वाले निकल कर
उसके पास आए, जब उन्होंने अपने गुनाहों
को माना तब यरदन नदी में यूहन्ना ने उन्हें
बपतिस्मा दिया। 6 यूहन्ना ऊँट के बालों का
वस्त्र पहिनता और कमर में खाल का पटुका
बान्धे रहता था। उसका भोजन टिड्डियाँ और
जंगल का शहद था।
7 वह कहता था, मेरे बाद में आने वाले मुझ
से ज़्यादा ताकतवर हैं। मैं तो इस लायक
भी नहीं कि, झुक कर उनके जूतों का फ़ीता
खोलूँ। 8 मैंने तो तुम्हें जल में डुबोया[b] है
लेकिन यीशु तुम्हें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा
देंगे।
9 उन दिनों में यीशु गलील के नासरत से
आए और यरदन नदी में यूहन्ना से बपतिस्मा
लिया। 10 पानी के बाहर आते ही यीशु ने
आकाश को खुलते और पवित्र आत्मा को
फ़ाख्ते की तरह अपने ऊपर उतरते देखा।
11 तभी आकाश से यह आवाज़ गूँज उठी,
“तुम मेरे प्यारे बेटे हो, मैं तुम से खुश हूँ।”
12 तब परमेश्वर का आत्मा यीशु को जंगल
में ले गया। 13 जहाँ चालीस दिन[c] तक शैतान
उनके सामने तमाम प्रलोभन लाता रहा। यीशु
जंगली जानवरों के साथ रहे तथा स्वर्गदूत
उनकी सेवा करते रहे।
14 यूहन्ना के हिरासत में ले लिए जाने के
बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के
शासन[d] का संदेश सुनाया। 15 और कहा,
“समय पूरा हुआ है और परमेश्वर का शासन
नज़दीक आ चुका है। मन बदल डालो और
खुशी की खबर पर विश्वास लाओ।
16 गलील की झील के किनारे जाते समय
यीशु ने शमौन और अन्द्रियास नामक मछुवों
को झील में जाल डालते देखा। 17 यीशु ने उन
से कहा, “तुम मेरे शिष्य बन जाओ, तब मैं
तुम्हें मनुष्यों के मछुवे बनाऊँगा।
18 तुरन्त जाल को छोड़कर वे यीशु के साथ
हो लिए।
19 थोड़ा आगे बढ़ते ही यीशु ने ज़बदी के
बेटे याकूब और उसके भाई यूहन्ना को, नाव
पर जाल को सुधारते देखा। 20 बुलाने पर वे
अपने पिता ज़बदी को मजदूरों के साथ नाव
पर छोड़कर, यीशु के साथ हो लिए।
21 कफ़रनहूम में सब्त के दिन
आराधनालय में जाकर यीशु सिखाने लगे।
22 क्योंकि यीशु धार्मिक शिक्षकों की
तरह नहीं लेकिन बड़े अधिकार के साथ
सिखाते थे, इसलिए लोगों को अचम्भा

[a] **1.4** गुनाहों [b] **1.8** बपतिस्मा दिया [c] **1.13** एक बड़े अर्से [d] **1.14** राज्य

हुआ। 23 तभी एक भूत[a] पीड़ित इन्सान ने
आराधनालय में चिल्लाकर कहा, “हे नासरी
यीशु, हमें ऐसे ही रहने दें, हमारा आप से
कोई सम्बध नहीं। 24 क्या आप हमें बर्बाद
करने आए हैं? मुझे मालूम है आप हैं कौन।
आप तो परमेश्वर के पवित्र जन हैं।”
25 यीशु ने डाँट कर उससे कहा, खामोश
रह और उस में से बाहर निकल।
26 तब वह भूत उसकी देह को मरोड़ते हुए
उस में से बाहर निकल गया। 27 यह देख
आश्चर्य से भरे लोग आपस में चर्चा करने लगे,
“यह क्या? यह तो कोई नयी शिक्षा है। यीशु
अधिकार के साथ भूतों को हुक्म देते हैं और
भूत उनका हुक्म मानते हैं।”
28 और यीशु का नाम तुरन्त गलील
के आस-पास के सारे प्रदेश में फैल
गया। 29 यीशु एक दम आराधनालय में से
निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ
शमौन और अन्द्रियास के घर आए। 30 यीशु
को बताया गया कि पतरस की सास को
बुखार चढ़ा हुआ है। 31 जैसे ही पास जाकर
यीशु ने पतरस की सास का हाथ पकड़ कर
उसे उठाया, उसका बुखार उतर गया और
वह यीशु की आवभगत में लग गयी।
32 शाम के समय सूरज ढलते ही लोग
यीशु के पास सब तरह के बीमारों को और
जिन्हें भूत लगा था, लाए। 33 दरवाज़े पर ही
सारा नगर आ गया। 34 यीशु ने तरह-तरह की
बीमारियों से दुखी बहुत से लोगों को ठीक
कर दिया और बहुत से भूतों को निकाला।
इसलिए कि भूत यीशु मसीह को पहचानते
थे, यीशु ने उन्हें खामोश कर दिया।
35 दिन निकलने से बहुत पहले यीशु उठे
और जंगली जगह में जाकर प्रार्थना करने
लगे। 36 तब शमौन और उसके साथी यीशु
को ढूँढने निकल पड़े। 37 यीशु को पा लेने
पर वे बोले, “सब लोग आपको ढूँढ रहे हैं।”
38 यीशु ने कहा, आओ हम सब आस
पास की दूसरी बस्तियों में जाकर लोगों को
सुसमाचार सुनाएँ, क्योंकि यही मेरा काम है।
39 इसलिए यीशु ने सारे गलील और उनके
आराधनालयों में जाकर सुसमाचार देना और
भूतों को निकालना जारी रखा।
40 वहीं पर घुटने टेकते हुए एक कुष्ट रोगी
ने बिनती की, “अगर आप चाहें तो मुझे शुद्ध
कर सकते हैं।”
41 यीशु ने तरस से भर कर छूते हुए कहा,
“मेरी इच्छा है कि तुम शुद्ध हो जाओ।”
42 तुरन्त उसका कोढ़ खत्म हो गया और
वह शुद्ध हो गया। 43 सावधानी बरतने की
सलाह के साथ यीशु ने उसे विदा किया।
44 और यह भी कि बिना किसी को कुछ
बताए वह खुद को पुरोहित के सामने पेश
करे। साथ ही यह कि सबूत के तौर पर मूसा
द्वारा निर्धारित भेंट को चढ़ाए।
45 वहाँ से जाते ही वह सब जगह अपने
ठीक हो जाने का ढिंढोरा पीटने लगा। इस
वजह से यीशु का खुल्लम-खुल्ला घूमना कम हो
गया। लेकिन बाहर की वीरान जगहों में यीशु
रहे और आस-पास के लोग उनके पास आते
गए।

2 बहुत दिनों के बाद कफ़रनहूम के एक
घर में यीशु की मौजूदगी के बारे में कई
लोगों को पता लगा। 2 बड़ी संख्या में लोगों
के आ जाने पर दरवाज़े के पास तक जगह
नहीं थी, लेकिन यीशु लोगों को परमेश्वर
की बातें[b] सिखा रहे थे। 3 तभी चार जन एक
लकुवे के बीमार को उठाए यीशु से मिलने
पहुँचे। 4 भीड़ की वजह से यीशु तक न पहुँच

[a] **1.23** दुष्टात्मा [b] **2.2** वचन

सकने के कारण, उन्होंने छत पर जाकर खपरैल हटाए। फिर बीमार आदमी सहित चारपाई को ऊपर से लटका कर यीशु के सामने रख दिया।

5 उन चारों के भरोसे को देख कर यीशु ने लकुवा पीड़ित से कहा, “बेटा तुम्हारे गुनाह माफ़ हो चुके हैं।”

6 तब वहाँ बैठे तमाम धार्मिक पण्डित अपने मनों में सोचने लगे, “यह इन्सान[a] ऐसा क्यों कह रहा है? 7 यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है, परमेश्वर को छोड़ और कौन है जो गुनाह माफ़ कर सकता है।

8 तुरन्त यीशु ने अपनी आत्मा में जान लिया कि वे अपने - अपने मन में क्या सोच रहे हैं। उन से यीशु ने कहा, “तुम अपने अन्दर यह ख्याल क्यों आने दे रहे हो? 9 क्या लकुवे से पीड़ित व्यक्ति से कहना कि उसके गुनाह माफ़ हो चुके हैं यह सरल है, या यह कि अपनी चारपाई उठा कर वापस जाओ?” 10 लेकिन उन्हें यह सिखाने के लिए कि अपराध क्षमा करने का अधिकार भी यीशु के पास है, 11 यीशु ने उस अपंग से कहा, “अपनी चारपाई उठा कर घर जाओ।”

12 उसी समय वह आदमी उठा, अपनी चारपाई उठाई और सब के देखते-देखते चला गया। यह देख सभी अचरज से भर कर कहने लगे, “हम ने ऐसा कभी नहीं देखा है।”

13 वहाँ से निकल कर यीशु झील के किनारे गए जहाँ सारी भीड़ उनके पास दौड़ी चली आयी और यीशु उन्हें सिखाने लगे। 14 जाते वक्त यीशु ने हलफ़ई के बेटे लेवी को टॅक्स की गद्दी पर बैठे देखा और उसे साथ आने के लिए कहा। और लेवी उनके साथ हो लिया।

15 जब यीशु उसके घर खाना खाने बैठे तब बहुत से टॅक्स लेने वाले और गुनाहगार भी वहाँ हाज़िर थे। तब तक यीशु के साथ हो लेने वालों की संख्या काफ़ी हो चुकी थी। 16 यह देख कर कि यीशु टॅक्स लेने वालों और गुनाहगारों के साथ खाना खा रहे हैं, धार्मिक पण्डितों और फ़रीसियों ने यीशु के शिष्यों से कहा, “वह तो टॅक्स लेने वालों और अपराधियों के साथ खाते-पीते हैं।”

17 यह सुन कर यीशु ने, उन से कहा, “तन्दरुस्त लोगों को डॉक्टर की ज़रूरत नहीं पड़ती है, लेकिन बीमारों को पड़ती है। मेरा निमन्त्रण[b] अपने को धर्मी समझने वाले लोगों के लिए नहीं है, लेकिन गुनाहगारों के लिए है।”

18 यूहन्ना के शिष्य और फ़रीसी उपवास करते थे, इसलिए उन्होंने आकर यीशु से यह कहा, “यूहन्ना के शिष्य और फ़रीसियों के शिष्य उपवास रखते हैं, लेकिन आपके शिष्य क्यों नहीं रखते?”

19 यीशु बोले, “क्या बराती कभी उपवास करेंगे जब कि दूल्हा उनके साथ है? कभी नहीं। 20 लेकिन ऐसे दिन आएँगे, जब दूल्हा बरातियों से अलग किया जाएगा, तब वे उपवास करेंगे। 21 पुराने पहने हुए कपड़ों पर कोई नये कपड़ों का पैवन्द नहीं लगाता है। ऐसा करने से नया पैवन्द पुराने कपड़ों में से कुछ खींच लेगा, और पहना हुआ पैबन्द लगा कपड़ा और ज़्यादा फट जाएगा। 22 ताज़े अंगूर के रस को कोई भी पुरानी मश्कों में नहीं रखता है, क्योंकि ऐसे में तो ताज़ा अंगूर का रस मश्कों को फाड़ डालेगा। परिणामस्वरूप अंगूर का रस और मश्कें दोनों ही बर्बाद हो जाएँगी। हमेशा नया रस नयी मश्कों में भरा जाता है।”

23 एक सब्त के दिन जब यीशु अपने शिष्यों के साथ खेतों में से हो कर जा रहे थे, शिष्य

[a] **2.6** यीशु [b] **2.17** बुलावा

चलते-चलते खड़ी फ़सल की बालें तोड़ने लगे।
24 फ़रीसियों ने कहा, “देखिए, सब्त में जो
करना जायज़ नहीं है, ये लोग वही कर रहे
हैं।
25 यीशु ने उन से कहा, “क्या तुम्हें मालूम
नहीं कि ज़रूरत के समय जब दाऊद और
उसके साथी भूखे हुए थे, तो उन्होंने क्या
किया था? 26 भेंट की रोटी पुरोहित के
अलावा किसी और को खाने की इज़ाज़त
नहीं थी। लेकिन क्या तुम्हें मालूम नहीं कि
अबियातार पुरोहित के समय दाऊद प्रार्थना
घर में गया और अपने साथियों के साथ मिल
कर वह रोटी खायी?
27 यीशु ने कहा, “सब्त इन्सान के लिये
बनाया गया था, न कि इन्सान सब्त के लिये।
28 क्योंकि मैं सब्त के दिन से भी बढ़ कर हूँ।”

3 यीशु जब फिर आराधनालय में गए तो
उन्होंने एक सूखे हाथ वाले इन्सान को
देखा।
2 फ़रीसी वहाँ यह देखने की फ़िराक में थे,
कि यीशु सब्त के दिन उसे स्वस्थ करते हैं
कि नहीं। 3 यीशु ने सूखे हाथ वाले आदमी से
कहा, “ज़रा बीच में तो आओ।”
4 तब यीशु ने फ़रीसियों से पूछा, “सब्त के
दिन क्या करना सही है-बुरा या भला, किसी
को बचाना या मारना?” लेकिन सभी खामोश
रहे।
5 यीशु ने उनके मन की कठोरता से उदास
होकर, बड़े गुस्से से उनकी तरफ़ देखा और
उस व्यक्ति से बोले, “अपना हाथ मेरी
तरफ़ लाओ।” ज्यों ही उसने ऐसा किया, वह
अच्छा हो गया।
6 तब फ़रीसी एक दम बाहर जाकर
हेरोदियों के साथ मिल कर सलाह मशविरा
करने लगे, कि यीशु को कैसे मार डालें।
7 इसके बाद अपने शिष्यों के साथ यीशु झील
के तरफ़ चल दिए और गलील से एक बड़ी
भीड़ उनके साथ हो ली। 8 यह सुन कर, कि
यीशु कैसे अजीब काम करते हैं, यहूदिया,
यरूशलेम, इदूमिया यरदन के पार से और
सूर-सैदा के आस-पास से एक बड़ी भीड़
उनके पास आयी।
9 यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, “भीड़ की
वजह से एक छोटी नाव मेरे लिये तैयार रखो,
ताकि लोग मुझे दबा न सकें। 10 इसलिये
कि यीशु ने लोगों की बीमारी दूर की थी,
बीमारी और पीड़ित लोग यीशु को छूने के
लिए गिरे पड़ते थे। 11 गंदी आत्माएँ यीशु को
देख कर गिर पड़ती थीं और चिल्लाकर कहती
थीं कि यीशु परमेश्वर हैं। 12 यीशु ने बार-बार
लोगों को सावधान किया कि वे उनके बारे
में ज़्यादा सूचना न दें।
13 इसके बाद यीशु पहाड़ पर गए, जहाँ
बुलाने पर वे सब आए जिन्हें वह चाहते थे।
14 तब यीशु ने खुशी की खबर[a] सुनाने के
लिए भेजे जाने वाले लोगों को चुना ताकि
वे उनके साथ रहें। 15 यह भी कि उन्हें भूतों
को निकालने का अधिकार हो।
16 बुलाए हुए इन लोगों के नाम हैं; शमौन,
जिस का नाम उन्होंने पतरस रखा, 17 ज़बदी
का बेटा याकूब, और याकूब का भाई
यूहन्ना जिस का नाम यीशु ने बूअनर्गिस
रखा, जिस का अर्थ है “गर्जन का पुत्र” ।
18 अन्द्रियास, फ़िलिप्पुस, बरतुल्मै , मत्ती,
थोमा, हलफ़ई का बेटा याकूब, तद्दे, शमौन
कनानी। 19 और यहूदा इस्करियोती, जिस ने

[a] 3.14 सुसमाचार

यीशु को पकड़वाया था। 20 जब यीशु घर में
आए तो इकट्ठी बड़ी भीड़ के कारण खाना न
खा सके। 21 जब यीशु के घर वालों ने यह
सुना, तो वे उन्हें पकड़ने के लिये निकले,
क्योंकि उनको लगा कि यीशु का दिमाग
खराब हो गया है।
22 यरूशलेम से आए हुए धार्मिक पण्डितों
का यह कहना था कि यीशु में शैतान है
और वह भूतों के स्वामी की मदद से उन्हें
निकालता है।
23 इसलिए यीशु ने उन्हें पास बुलाकर,
उदाहरण देकर बताया कि शैतान भूतों को
नहीं निकाल सकता है। 24 उदाहरण ये थेः
अगर किसी देश में एकता खत्म हो जाए तो
वह कैसे स्थिर रह सकेगा? 25 अगर किसी
घर में फूट पड़ जाए तो वह घर कैसे बना रह
सकेगा? 26 इसलिए शैतान अपना ही विरोधी
होकर अपने में फूट डाले, तो बना ही नहीं
रह सकेगा, लेकिन उसका अन्त आ पहुँचा
है। 27 कोई इन्सान किसी के घर में घुस कर
उसका सामान नहीं लूट सकता, जब तक कि
वह पहले उस ताकतवर को बाँध न ले, तभी
वह उसके घर को लूट सकेगा।
28 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि लोगों के
सभी अपराध और निन्दा के शब्दों को माफ़
किया जाएगा। 29 लेकिन जो कोई पवित्र
आत्मा के खिलाफ़ कुछ कहे, वह कभी भी
माफ़ नहीं किया जाएगा, लेकिन वह हमेशा
के गुनाह[a] का मुजरिम ठहरेगा।
30 यीशु ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे
कहा करते थे कि यीशु में गंदी आत्मा है।
31 तब यीशु की माँ और भाईयों ने आकर
बाहर ही से बुलाया। 32 आस-पास में बैठे
लोगों ने यीशु से कहा, “देखिए आपकी माँ
जी और भाई ढूँढते-ढूँढते बाहर आ पहुँचे
हैं।”
33 यीशु ने पूछा, “मेरी माँ और मेरे भाई कौन
हैं?”
34 यीशु ने अपनी दृष्टि अपने आस-पास
बैठे लोगों पर दौड़ाते हुए कहा, “देखो, मेरी
माँ और भाई यही हैं।” 35 इसलिए कि जो
व्यक्ति परमेश्वर की बातों के अनुसार
करता है, वही मेरा भाई, बहन और माँ है।

4 झील के किनारे यीशु मसीह के सिखाते
समय एक बड़ी भीड़ आ इकट्ठी हुयी
थी। 2 इसलिए यीशु को एक नाव पर बैठना
पड़ा, जब कि भीड़ झील के किनारे खड़ी
रही।
3 दृष्टान्त देकर यीशु सिखाया करते थे, उन
में से एक ऐसा थाः एक किसान बीज बोने
निकला, 4 बोते समय कुछ बीज रास्ते के
किनारे गिर गए और पक्षियों ने आकर उन्हें
चुग लिया। 5 कुछ बीज पथरीली ज़मीन पर
गिरे जहाँ उनको गहरी मिट्टी न मिलने पर भी
जल्दी उग आए। 6 पर सूरज निकलते ही जड़
न पकड़ने की वजह से वह सूख गए। 7 कुछ
बीज झाड़ियों में गिरे, और झाड़ियों ने बढ़
कर उन्हें दबा लिया, इसलिए बीज कुछ भी
फल न ला सके। 8 लेकिन कुछ बीज अच्छी
ज़मीन पर गिरे, वे उग कर फलवन्त हुए।
कोई बीज तीस गुणा, कोई साठ गुणा और
कोई सौ गुणा फल लाया।
9 तब यीशु ने कहा, जो मेरी बातों को सुन
कर उचित कदम उठाए उसके लिए यह
फ़ायदेमन्द है।

[a] **3.29** अपराध

10 यीशु के अकेले हो जाने पर उनके
साथियों और उन बारहों ने यीशु से इन
दृष्टान्तों के बारे में पूछा।
11 यीशु ने उन से कहा, तुम लोगों को
परमेश्वर के राज्य के रहस्य की समझ
दी गई है, लेकिन बाहर वालों के लिये
सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं। 12 वे देखते
तो रहेंगे लेकिन समझ नहीं पाएँगे, सुनेंगे
लेकिन समझ नहीं सकेंगे इसलिए उनका मन
बदलाव न होने की वजह से उनके गुनाह
माफ़ नहीं हो सकेंगे।
13 फिर यीशु ने उन से कहा, "क्या तुम इस
दृष्टान्त का मतलब नहीं समझे, तो फिर और
दूसरे दृष्टान्तों को कैसे समझोगे? 14 जो बोने
का काम करता है, वह वचन बोता है। 15 जो
रास्ते के किनारे के हैं, ये वे लोग हैं कि जब
उन्होंने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर जो कुछ
सिखाया गया है, उठा ले जाता है। 16 वैसे
ही जो पथरीली ज़मीन पर बोए जाते हैं, ये
वे लोग हैं, जो सिखाई गयी बातों को सुन
कर तुरन्त खुशी से अपना लेते हैं। 17 लेकिन
अपने अन्दर मज़बूत न होने से थोड़े दिनों
के लिये रहते हैं। इसके बाद अपनाई जाने
वाली यीशु की शिक्षा के कारण से जब उन
पर दुख या परेशानी आती है तो वे पीछे हट
जाते हैं। 18 जो झाड़ियों में बोए गए वे ये हैं,
जो खुशी की खबर सुनते हैं, लेकिन 19 दुनिया
की फ़िकर, दौलत का धोखा और दूसरी
चीज़ों का लालच उन में समाकर परमेश्वर
के संदेश को धर दबोचता है और वह बिना
फले रह जाता है। 20 जो बीज अच्छी ज़मीन में
बोए गए, ये वे हैं, जो खुशी की खबर सुन कर
अपनाते हैंऔर जीवन में तरक्की भी दिखाते
हैं, कुछ तीस गुणा, कुछ साठ गुणा, और
कुछ सौ गुणा।
21 यीशु ने उन से कहा, 'क्या दीपक को
इसलिये लाया जाता है कि बर्तन के भीतर
या चारपाई के नीचे रखा जाए? 22 क्योंकि
कोई चीज़ छिपी नहीं, जो सामने नहीं आएगी,
न ही ऐसी कोई चीज़ गुप्त में है, जो प्रगट
नहीं होगी। 23 अगर कोई मेरी बातों पर ध्यान
देना, चाहता है तो दे।
24 फिर यीशु ने उन से कहा, "जो कुछ सुना
करते हो, उसके बारे में सावधानी बरतो।
जिस नाप से तुम दूसरों के लिए नापा करते
हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए नापा भी जाएगा
और जो अधिक सुनता है, उस को ज़्यादा
दिया जाएगा। 25 क्योंकि जिस किसी के पास
है, उसे और मिलेगा, जिस के पास नाम मात्र
है उससे वह भी ले लिया जाएगा।"
26 फिर यीशु ने कहा, "परमेश्वर का राज्य
ऐसा ही है, जैसे कोई आदमी ज़मीन में बीज
डाले। 27 रात को सोए, और दिन को जागे
और वह बीज कैसे उगे और बढ़े कि वह
न जाने। 28 मिट्टी में छिपी ताकत ही से कोई
बीज, अंकुर, बाल और फिर बालों में दाने को
तैयार करती है। 29 दाने पक जाने पर किसान
कटनी के लिए हँसिया इस्तेमाल करता है।"
30 फिर यीशु बोले, "मैं परमेश्वर के राज्य
की बराबरी किस से करूँ और कौन सा
उदाहरण देकर उसके बारे में समझाऊँ?
31 परमेश्वर का राज्य राई के बीज की तरह
है। बोए जाने वाले सभी बीजों में यह सब से
छोटा तो है। 32 लेकिन उगने के बाद सभी
साग सब्ज़ियों में बड़ा हो जाता है। उसकी
डालियाँ इतनी बड़ी हो जाती हैं, कि आकाश
में उड़ने वाले पक्षी आकर उसकी छाया में
बसेरा करते हैं।
33 लोगों की समझ के मुताबिक दृष्टान्त दे
देकर यीशु उन्हें सिखाया करते थे। 34 बिना

दृष्टान्त दिए यीशु उन से कुछ भी नहीं कहा
करते थे। जब अकेले में केवल शिष्य हुआ
करते थे, तब उन दृष्टान्तों का मतलब बताया
करते थे।
35 उसी शाम को यीशु ने शिष्यों से कहा,
"आओ हम सब उस पार चलें!"
36 भीड़ को विदा करने के बाद वे सभी
यीशु के साथ एक नाव पर सवार हो गए।
37 तभी एक तेज आन्धी आने से लहरें नाव
पर यहाँ तक टकराने लगीं, कि उस में पानी
भरने लगा। 38 लेकिन यीशु स्वयं नाव के
पिछले हिस्से में गद्दी पर सो रहे थे। यीशु
को जगाते हुए उन लोगों ने कहा, "गुरु जी
क्या आपको मालूम नहीं कि हम डूबने पर
हैं?"
39 तुरन्त यीशु ने उठ कर आँधी को डाँटते
हुए पानी से कहा, "खामोश!" तभी आँधी
थम गयी और खामोशी छा गयी। 40 यीशु
बोल उठे, "तुम डर क्यों गए? क्या अब तक
तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?" शिष्य डरे
और सहमे आपस में एक दूसरे से कहने लगे,
"आखिर यह हैं कौन कि आँधी और पानी भी
उनकी बात मानते हैं?"
41 घबराहट के कारण उनका पसीना छूटने
लगा और बोल उठे, "यह कौन है कि आँधी
और पानी भी उनकी बात मानते हैं?

5 वे सब झील के उस पार गिरासेनियों
के देश में पहुँचे। 2 जैसे ही यीशु नाव
पर से उतरे, तुरन्त भूत[a] की गिरफ़्त में बँधा
एक आदमी यीशु से मिला जो कब्रिस्तान से
निकल कर आया था। 3 वह कब्रिस्तान में
रहा करता था और कोई उसे जंजीरों से बाँध
कर रखने में भी कामयाब नहीं हुआ था।
4 वह बार-बार बेड़ियों और जंजीरों से बान्धा
जाता था, लेकिन उन्हें वह टुकड़े-टुकड़े कर
डालता था। वह किसी के काबू में नहीं
आता था। 5 रात-दिन वह कब्रों और पहाड़ों
पर चिल्लाता, और अपने आपको पत्थरों से
ज़ख्मी किया करता था।
6,7 दूर ही से यीशु को देख कर वह दौड़
कर आया और प्रणाम करने के बाद ऊँची
आवाज़ से चिल्लाकर बोला, "हे यीशु, परम
प्रधान परमेश्वर के बेटे, आप से मुझे कुछ
लेना देना नहीं। मैं कसम से आपको कहता
हूँ, कि मुझे दुख न दें।"
8 ऐसा वह इसलिए कह रहा था, क्योंकि
यीशु ने उससे कहा था, "भूत इस आदमी में
से निकल।"
9 यीशु ने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?" उस
आदमी ने कहा, "मेरा नाम सेना है, क्योंकि
हम ढेर सारे हैं।"
10 वह आदमी बहुत गिड़गिड़ाया, "हमें इस
देश के बाहर न भेजें!" 11 वहीं पहाड़ों पर
सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था।
12 भूतों ने यीशु से गुज़ारिश की, "कि हमें
सूअरों के अन्दर भेज दें।"
13 यीशु ने वैसा ही किया और भूत निकल
कर सूअरों के अन्दर घुस गए, जिस की
वजह से तकरीबन दो हज़ार सूअरों का झुण्ड
बहुत तेज़ी से झील में जा डूब मरा। 14 सूअरों
के चरवाहे भाग खड़े हुए और गाँवों में खबर
दी। खबर सुनते ही लोग देखने के लिए वहाँ

[a] **5.2** दुष्टात्मा

आ पहुँचे। 15 जिस आदमी में भूतों की सेना
थी, उसे कपड़े पहने और पूरे होश-हवास में
देख कर, आए हुए लोग डर गए।
16 घटना देखने वालों ने भूत पीड़ित
व्यक्ति और सूअरों का पूरा हाल बताया।
17 उन लोगों ने यीशु से बिनती की, कि वह
उनके गाँव की सरहद के बाहर चले जाएँ।
18 भूतों से आज़ादी पाया हुआ आदमी यीशु
के नाव पर चढ़ते वक्त बिनती करने लगा,
कि यीशु उसे अपने साथ रहने दें। 19 लेकिन
यीशु ने उसकी न सुनते हुए कहा, "अपने
घर जाकर अपने लोगों को बताओ कि तुम
पर दया करके प्रभु ने तुम्हारे लिए कैसे बड़े
काम किए हैं।" 20 दिकापुलिस में जाकर वह
लोगों को बताने लगा, कि यीशु ने उसके लिए
कितने बड़े काम किए। और लोग सुन कर
आश्चर्य से भर गए।
21 यीशु के नाव से दूसरी पार जाते ही,
एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। 22 वहीं झील
के किनारे, आराधनालय के प्रधानों में से
याईर नामक एक आदमी आया और यीशु
के कदमों पर गिर पड़ा। 23 गिड़गिड़ाते हुए
उसने यीशु से कहा, "मेरी बेटी मरने पर है।
आप आकर उस पर हाथ रखें, ताकि वह
ठीक होकर ज़िन्दा रहे।"
24 यीशु उसके साथ उसके घर की तरफ़
चल पड़े। भीड़ इतनी ज़बरदस्त थी कि लोग
एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे। 25 एक महिला
को बारह साल से खून बहने की बीमारी
थी। 26 डॉक्टरों से उसे बहुत दुख मिला था,
क्योंकि उसके अपनी सारी दौलत इलाज में
लगा देने के बावजूद फ़ायदा होने के बजाए
और बीमार हो गयी थी। 27 यीशु की शौहरत
सुन कर भीड़ में यीशु के पीछे से आकर उसने
यीशु के कपड़ों को छू लिया। 28 वह माना
करती थी, "अगर मैं यीशु के कपड़ों ही को
छू लूँगी तो ठीक हो जाऊँगी।" 29 उसी वक्त
उसका खून बहना बंद हो गया और उसने
अपनी देह में महसूस किया कि उसे बीमारी
से मुक्ति मिल गयी है।
30 यह महसूस करते ही कि यीशु की देह
से शक्ति निकली है, पीछे मुड़ कर यीशु ने
कहा, "मेरे कपड़ों को किस ने छुआ है?"
31 यीशु के शिष्य बोल उठे, "आप भीड़ के
दबाव को देख भी रहे हैं और फिर भी कह
रहे हैं कि आपको किस ने छुआ है?"
32 छूने वाले व्यक्ति को देखने के लिए
यीशु ने अपनी नज़र दौड़ायी। 33 लेकिन जिस
महिला को बीमारी से आज़ादी मिल चुकी
थी, डरते और काँपते हुए यीशु के सामने
आकर गिर पड़ी और सब कुछ बताया।
34 यीशु ने उससे कहा, "बेटी, तुम्हारे
विश्वास के फलस्वरूप तुम स्वस्थ हुयी
हो।"
35 यीशु उससे बात कर ही रहे थे कि कुछ
लोग जो आराधनालय के प्रबन्धक के घर से
आए थे, कहने लगे, "तुम्हारी बेटी मर चुकी
है, गुरु जी को अब तकलीफ़ क्यों दे रहे हो?"
36 जैसे ही यीशु ने लोगों के इन शब्दों को
सुना, उन्होंने आराधनालय के प्रबन्धक से
कहा, "डरने की बात नहीं हैं, सिर्फ़ भरोसा
रखो।"
37 पतरस, याकूब और याकूब के भाई
यूहन्ना को छोड़कर यीशु ने किसी और को
अपने साथ नहीं आने दिया। 38 आराधनालय
के प्रबन्धक के घर पहुँचने पर यीशु ने वहाँ
शोर शराबे के अलावा लोगों को ज़ोर-ज़ोर से
रोते हुए पाया। 39 अन्दर आते ही यीशु ने उन
से कहा, "यह सब रोना-धोना क्यों मचा रखा
है?" बच्ची मरी नहीं है वह तो सो रही है।
40 वहाँ इकट्ठे लोग यीशु की इस बात पर
हँस पड़े। लेकिन जब यीशु ने सभी को बाहर

कर दिया, बच्ची के माता-पिता और अपने
साथियों समेत उस जगह पहुँचे जहाँ वह लेटी
हुयी थी। 41 बच्ची का हाथ पकड़ते हुए यीशु
ने उसे उठ जाने को कहा।
42 तुरन्त वह बेटी उठी और चलने फिरने
लगी। वहाँ मौजूद सभी लोग आश्चर्य से भर
गए। 43 यीशु ने उन्हें सख्ती से कहा, "कि इस
घटना के बारे में कोई न जानने पाए। यह भी
कि इस लड़की को खाने के लिए कुछ दिया
जाए।"

6 यीशु वहाँ से निकल कर अपने देश
में आए, और उनके शिष्य उनके
साथ-साथ थे। 2 सब्त के दिन यीशु उनके
आराधनालय में उन्हें सिखाने लगे। उन्हें सुन
कर लोग आश्चर्य से भर गए और आपस में
कहने लगे, "यह ज्ञान इस व्यक्ति को कहाँ
से मिल गया? 3 यह भी कि यह कैसा ज्ञान है
कि उनके द्वारा महान काम होते हैं? क्या यह
बढ़ई नहीं है, जो मरियम का बेटा, याकूब,
योसेस, यहूदा और शिमोन का भाई है? क्या
इसकी बहनें हमारे साथ नहीं हैं?" इस तरह
से लोगों के मन में शिकायत थी।
4 लेकिन यीशु उन से बोले, "एक नबी
अपने जन्म स्थान, अपने घर और अपने
रिश्तेदारों में बेइज़्ज़त होता है।"
5 कुछ बीमारों पर हाथ रखने और उन्हें
ठीक करने के अलावा यीशु कोई बड़ा काम
वहाँ न कर सके। 6 उनके अविश्वास पर
यीशु को शक तो हुआ लेकिन वह एक गाँव
से दूसरे गाँव जाकर लोगों को सिखाते गए।
7 यीशु बारहों को बुलाकर दो-दो करके
भेजते गए और भूत प्रेत के ऊपर अधिकार
दिया। 8 सफ़र में जाते समय उन्होंने एक
लाठी के अलावा जैसे झोला, रोटी और पैसा
आदि लेने को मना किया। 9 यीशु ने चप्पल
पहनने के लिए कहा लेकिन एक से ज़्यादा
कमीज़ लेने को मना किया।
10 यीशु ने उन से कहा, जब कभी तुम किसी
घर में दाखिल हो, जगह छोड़ने से पहले वहीं
रहो। 11 जो कोई तुम्हें न अपनाए या तुम्हारी न
सुने जब तुम वह जगह छोड़ो, उनके खिलाफ़
एक सबूत के लिए अपने पैरों की धूल झाड़
डालो। मैं तुम से सच कहता हूँ कि इन्साफ़
के दिन इस शहर से ज़्यादा सहनीय सदोम
और अमोरा की हालत होगी।
12 वहाँ से जाने के बाद वह यह घोषणा
करने लगे कि सब को मन बदलने की ज़रूरत
है। 13 उन्होंने बहुत से भूतों को निकाला और
बीमार लोगों पर तेल लगा कर ठीक कर
दिया।
14 हेरोदेस राजा ने यीशु के बारे में सुन रखा
था, क्योंकि यीशु मशहूर हो चुके थे। उसने
कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जी उठा
है इसलिए वह आश्चर्य के काम कर रहा है।"
15 दूसरों ने कहा, "यह एलिय्याह है"
और दूसरों ने यह कि यह पुराने समय के
भविष्यद्वक्ता की तरह ही है।"
16 हेरोदेस ने यह सुन कर कहा, "हो न हो,
यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ही है जिस
का मैंने सिर कटवाया था। वह मुर्दों में से जी
उठा है।"
17 इसलिए कि खुद हेरोदेस ने आदमियों
को भेज कर उसे जेल में जंजीर से बँधवा
दिया था, क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई
फ़िलिप्पुस की पत्नी को ब्याह लिया था।
18 यूहन्ना ने हेरोदेस को कहा था, "अपने भाई
की बीवी को रखना गैरकानूनी है।"
19 इसलिये हेरोदियास उससे नफ़रत करती
थी और जान से मारना चाहती थी, लेकिन
ऐसा न कर सकी थी। 20 इसलिए कि यूहन्ना
ईमानदार और खरा इन्सान था, हेरोदेस ने

डर की वजह से उसे बचा रखा। हालाँकि
हेरोदेस बड़ी खुशी से यूहन्ना की सुना करता
था, लेकिन उसमें बड़ी घबराहट भी थी।
21 एक समय आया, जब अपने जन्म दिन
के अवसर पर शाही खानदान के लोगों,
फ़ौजी अफ़सरों और गलील के माननीय
सदस्यों को, हेरोदेस ने दावत पर बुलाया।
22 जब हेरोदियास की बेटी ने आकर नाचा
और हेरोदेस तथा आए हुए मेहमानों को खुश
कर दिया, राजा ने लड़की से कहा, “तुम जो
कुछ भी माँगोगी, मैं तुम्हें दूँगा।”
23 उसने कसम खाते हुए कहा, “तुम मुझ
से जो कुछ माँगोगी, मैं दूँगा, यहाँ तक कि
आधा राज्य तक।”
24 बाहर जाकर लड़की अपनी माँ से
बोली, “मैं क्या माँगूं?”, माँ ने कहा, “यूहन्ना
बपतिस्मा देने वाले का सिर।”
25 तुरन्त लड़की भाग कर राजा के पास
गयी और बोली, “मुझे यूहन्ना बपतिस्मा देने
वाले का सिर थाली में चाहिए।”
26 तब राजा को बहुत दुख हुआ, लेकिन
क्योंकि वह वचन दे चुका था और बैठे
लोगों को भी सब मालूम था, वह अपनी
कही बात से मुकर न सका। 27 उसी वक्त
राजा ने सिपाही को हुकुम दिया कि उसका
सिर लाया जाए। जेल में जाकर सिपाहियों ने
उसका सिर काटा और थाली में रख, आकर
लड़की को दे दिया। उस लड़की ने सिर
अपनी माँ को दे दिया। 28 जब उसके शिष्यों
ने यह सब सुना तो आए, उसकी लाश उठायी
और कब्र में रख दिया।
29 प्रेरित यीशु के चारों तरफ़ इकट्ठे हुए और
सब कुछ बता दिया, वह सब जो उन्होंने
किया था और जो कुछ सिखलाया था।
30 लोगों का आना जाना लगा हुआ था, और
उनके पास खाने का समय नहीं था।
31 यीशु ने उन से कहा, “सुनसान जगह
जाकर थोड़ा आराम कर लो।”
32 और वे सभी एक नाव पर बैठ कर
वीरान जगह चले गए। 33 लोगों ने उन सभी
को रवाना होते[a] हुए देखा था। बहुतों ने यीशु
को पहचान लिया और आस पास के इलाकों
से पैदल ही निकल पड़े। वे यीशु से पहले वहाँ
पहुँचे और इकट्ठे हो गए। 34 नाव से उतरते ही
यीशु ने एक बड़ी भीड़ को देखा। यीशु उन्हें
देख कर तरस से भर गए क्योंकि वे ऐसी भेड़ों
की तरह थे, जिन का कोई चरवाहा नहीं था।
यीशु उन्हें सिखाने लगे।
35 जब दिन ढल चुका यीशु के शिष्य उनके
पास आकर कहने लगे, “यह सुनसान जगह
है और बहुत देर हो चुकी है। 36 इन्हें भेज
दीजिए, ताकि आस-पास की बस्ती और
गाँव में जाकर वे अपने लिए रोटी खरीदें,
क्योंकि उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं
था।”
37 यीशु ने कहा, “तुम ही उन्हें खाने के लिए
कुछ दो।” शिष्यों ने कहा, “क्या हम बाज़ार
जाकर 200 चाँदी के सिक्कों से रोटी लाकर
इन को परोसें?”
38 यीशु ने उन से कहा, “तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं? जाओ और देखो”, मालूम
करके उन्होंने बताया, कि एक लड़के के
पास केवल पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं।
39 तब यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि सभी को
घास पर झुण्ड में बैठाया जाए। 40 वे सौ
और पचास-पचास के झुण्ड में वहाँ बैठ गए।
41 तब पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लेकर
यीशु ने आकाश की तरफ़ देखते हुए रोटियों

[a] **6.33** जाते

पर आशीर्वाद माँग कर तोड़ते हुए शिष्यों को
दीं कि वे लोगों को बाँट दें। 42 वे सभी खा
कर तृप्त हो गए।
43 खाने के बाद उन्होंने बचे हुए टुकड़ों के
बारह टोकरे उठाए और मछली भी। 44 रोटी
खाने वालों की संख्या लगभग पाँच हज़ार
पुरुषों की थी।
45 तुरन्त यीशु ने अपने शिष्यों को नाव में
बैठाया ताकि वे उस पार बैतसैदा पहले पहुँच
जाएँ, और इसी बीच यीशु ने लोगों को भी
विदा कर दिया। 46 उन लोगों को भेज देने के
बाद यीशु पहाड़ पर प्रार्थना करने चले गए।
47 शाम के समय में नाव जब झील के
बीच में थी, सिर्फ़ यीशु ही किनारे पर थे।
48 इसलिए कि ज़ोरों की हवा चल रही थी,
यीशु ने उन्हें हवा के विरोध में बहुत संघर्ष
करते हुए देखा। लगभग चार बजे सुबह
यीशु झील पर चलते हुए उनके पास आए।
49 लेकिन जब उन्होंने यीशु को झील पर
चलते हुए देखा तो उन्हें भूत समझ कर चिल्ला
पड़े। 50 वे सभी यीशु को देख कर घबरा गए।
तुरन्त यीशु बोल उठे, “हिम्मत रखो, मैं हूँ,
डरो मत।”
51 उनके साथ यीशु नाव में बैठ गए और
आँधी भी थम गई। अपने मन ही मन वे बहुत
ज़्यादा आश्चर्य से भर गए थे। 52 उनके मन
कठोर हो जाने की वजह से उन्होंने रोटियों
के आश्चर्यकर्म पर ध्यान ही नहीं दिया था।
53 जब वे पार उतर गए तो गन्नेसरत के तट
पर आ गए। 54 नाव के बाहर आते ही लोगों
ने उन्हें तुरन्त पहचान लिया। 55 जहाँ-जहाँ
वे जाते थे, लोग आस-पास के इलाकों से
अपने बीमारों को चारपाई पर लिटाकर चले
आते थे। 56 जहाँ कहीं यीशु गए, गाँवों, शहर
या बस्ती, लोग अपने बीमारों को बाज़ार में
लाकर उन से बिनती करते थे कि यीशु अपने
पहरावे के छोर को छूने दें। जितनों ने उन्हें
छुआ वे अच्छे हो गए। पहरावे

7 तब फ़रीसी और शास्त्री जो यरूशलेम
से आए थे, यीशु के चारों ओर इकट्ठे हो
गए। 2 जब उन्होंने कुछ शिष्यों को बिना हाथ
धोए खाना खाते देखा, तो नुकताचीनी की।
3 इसलिए कि फ़रीसी और यहूदी, बुज़ुर्गों की
प्रथा के अनुसार जब तक अपने हाथ नहीं
धोते थे, खाना भी नहीं खाते थे। 4 बाज़ार से
घर वापस आने पर भी वे बिना हाथ धोए
खाना नहीं खाया करते थे। और भी तमाम
रीतियाँ उनके बीच थीं, जैसे प्याले, बर्तन,
काँसे के बर्तन और मेज़ों को धोना।
5 तब फ़रीसियों और शास्त्रियों ने यीशु से
पूछा, “आपके शिष्य बुज़ुर्गों की परम्परा के
मुताबिक नहीं करते, और बिना हाथ धोए
खाना खाते हैं?”
6 यीशु ने जवाब में कहा, “कपटियो,
यशायाह ने तुम्हारे बारे में सही भविष्यवाणी
की है।
7 ‘ये लोग सिर्फ़ ओठों से मेरी इज़्ज़त करते
हैं, लेकिन उनका मन मुझ से दूर रहता है।
बेकार, ही में वे मेरी आराधना करते हैं,
मनुष्यों की आज्ञाओं को ईश्वरीय शिक्षा के
रूप में पेश करते हैं।’
8 परमेश्वर की आज्ञा को ठुकराकर, तुम
लोग इन्सान की अपनायी प्रथा, जैसे प्यालों
और बर्तनों को धोने-धाने का ज़्यादा ख्याल
रखते हो, ऐसी ही और भी बहुत सी बातें तुम
करते हो।”
9 यीशु ने उन से कहा, “अपनी रीति
विधियों को पूरा करने की होड़ में तुम
परमेश्वर की इच्छा को टाल देते हो।
10 क्योंकि मूसा ने कहा है, ‘अपने माता-पिता
की इज़्ज़त करना, और हर एक जन जो अपने

माता-पिता का बुरा चाहे, उसे मौत की सज़ा
दी जानी चाहिए।' 11 लेकिन तुम कहते हो,
कि अगर एक आदमी अपने माता-पिता से
कहे, 'मेरा जो कुछ भी है, जो आप लोगों
के काम आ सकता था, कुर्बान[a] हो चुका
है, ऐसा कहना ठीक है। 12 इस तरह से तुम
उसके माता-पिता के लिए कुछ करने नहीं
देते हो। 13 इस तरह अपनी बनाई गयी प्रथा
को मानने के द्वारा तुम परमेश्वर की आज्ञा
को टाल देते हो, ऐसे ही बहुत से काम तुम
करते हो।"

14 पूरी भीड़ से यीशु ने कहा, "हर एक जन
जो मेरी बात को सुने वह समझे, 15 बाहर
से आदमी के भीतर जाने वाली कोई चीज़
आदमी को अशुद्ध नहीं कर सकती। लेकिन
जो चीज़ें आदमी के भीतर से निकलती हैं, वे
ही उसे अशुद्ध करती हैं। 16 अगर किसी के
पास सुनने के कान हों, तो वह सुने।

17 जब यीशु लोगों को छोड़ घर आए, उनके
शिष्यों ने दृष्टान्त के बारे में उन से पूछा।

18 यीशु ने उन लोगों से कहा, "क्या तुम्हारे
पास भी समझ की कमी है? क्या तुम देख
नहीं सकते कि जो कुछ आदमी के अन्दर
बाहर से जाता है, वह उसे अशुद्ध नहीं करता
है। 19 इसलिए कि वह सब कुछ उसके मन
में नहीं जाता है, पेट में जाकर देह से बाहर
निकल जाता है।

20 यीशु ने कहा, जो कुछ इन्सान के मन
से आता है वह उसे अशुद्ध करता है।
21 इसलिए कि इन्सान के अन्दर गन्दे ख्याल,
व्यभिचार, हत्या, 22 चोरी, लोभ, दुष्टता,
धोखा, कामुकता, बुरी-नज़र, निन्दा, घमण्ड
और मूर्खता, 23 ये सभी बातें मन से निकलती
हैं और इन्सान को अशुद्ध करती हैं"

24 वहाँ से उठ कर यीशु सूर और सैदा की
सीमा तक पहुँचे, वहीं एक घर के भीतर
गए, लेकिन नहीं चाहते थे कि कोई इस बात
को जाने। लेकिन लोग जान ही गए। 25 एक
महिला जिस की बेटी में भूत था, यीशु के
बारे में सुन कर आयी और उनके पैरों पर
गिर पड़ी। 26 वह यूनानी और सूरूफ़िनीकी
जाति की थी। उसने बिनती की कि उसकी
बेटी में से भूत निकाल दें।

27 लेकिन यीशु ने कहा, "पहले बच्चों का
पेट भर जाने दो। यह उचित नहीं कि बच्चों
की रोटी कुत्तों को दी जाए।"

28 महिला ने जवाब में कहा, "हाँ प्रभु, फिर
भी कुत्ते तो मेज़ से गिरे चूरचार को खाते हैं।"

29 यीशु ने कहा, "तुम्हारी इस बात की
वजह से चली जाओ, तुम्हारी बेटी में से भूत
निकल चुका है।"

30 घर पहुँचने पर उसने अपनी बेटी को
बिस्तर पर लेटे पाया, जिस में से भूत निकल
चुका था।

31 सूर और सैदा से निकल दिकापुलिस से
होते हुए यीशु फिर गलील की झील तक
पहुँचे। 32 लोग यीशु के पास एक बहिरे को
लाए जो ठीक से बात भी नहीं कर सकता
था। उन्होंने उन से बिनती की कि उस आदमी
को ठीक कर दें। 33 वह उसे भीड़ से अलग
ले गए और उसके कानों में अपनी उंगलियाँ
डालीं, और थूक कर जीभ को छू लिया।
34 ऊपर आकाश की तरफ़ देख कर यीशु
बोले, "इप्फ़त्तह," अर्थात् खुल जा। 35 तुरन्त
उसके कान खुल गए और जीभ के तन्तु ढीले
पड़ गए और वह साफ़-साफ़ बोलने लगा।
36 यीशु ने उन लोगों को आज्ञा दी कि वह
किसी को न बतलाएँ। लेकिन जितना यीशु

[a] **7.11** परमेश्वर को अर्पण

ने मना किया, उतना ही ज़्यादा उन लोगों ने चर्चा की।
37 उनके आश्चर्य की सीमा न रही और वे
कह उठे "यीशु सब कुछ ठीक कर देते हैं,
यहाँ तक कि बहरे सुनने और गूँगे बोलने लगे
हैं।"

8 अब तक भीड़ बढ़ चुकी थी और उनके
खाने के लिए कुछ नहीं था, तभी यीशु ने
अपने शिष्यों को बुलाकर कहा, 2 "इसलिए
कि लोग मेरे साथ तीन दिन से हैं और इन के
पास खाने के लिए कुछ नहीं है, मुझे इन पर
बड़ी दया आ रही है। 3 अगर मैं इन्हें खाली
पेट घर भेज दूँ, तो ये लोग रास्ते ही में बेहोश
होकर गिर पड़ेंगे, क्योंकि इन में से बहुत लोग
काफ़ी दूर से आए हैं।"
4 यीशु के शिष्य बोले, "इस छोटी जगह में
इतने सारे लोगों के लिए रोटी का इन्तज़ाम
कैसे किया जा सकता है?"
5 यीशु ने पूछा, "तुम्हारे पास कितनी
रोटियाँ है?" वे बोले, "सात"।
6 यीशु ने सभी लोगों को ज़मीन पर बैठ
जाने की आज्ञा दी। सात रोटियाँ अपने हाथ में
लेकर, धन्यवाद के साथ तोड़ीं और शिष्यों ने
लोगों को परोस दीं। 7 उनके पास कुछ छोटी
मछलियाँ भी थीं, जिन्हें यीशु ने लोगों में बाँटने
के लिए आज्ञा दी। 8 वे लोग खाना खा कर
तृप्त हो गए। और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से
सात टोकरियाँ भर लीं। 9 उस दिन करीब चार
हज़ार लोगों ने खाना खाया। फिर यीशु ने उन्हें
घर भेज दिया।
10 इसके तुरन्त बाद यीशु अपने शिष्यों के
साथ नाव पर बैठ कर दलमनूता इलाके की
तरफ़ रवाना हुए। 11 फ़रीसी आकर सवाल
करने लगे और परखने के लिए स्वर्ग से
किसी चिन्ह की माँग की। 12 बड़ी गहरी सांस
लेते हुए यीशु बोले, "इस ज़माने के लोग
चिन्ह की तलाश में क्यों रहते हैं? मैं तुम से
सच कहता हूँ, इस ज़माने के लोगों को कोई
चिन्ह नहीं दिया जाएगा।"
13 उनको छोड़कर फिर यीशु नाव पर बैठ
कर उस पार चले गए। 14 शिष्य अपने साथ
रोटी लेना भूल गए थे। उनके पास नाव में एक
से ज़्यादा रोटी नहीं थीं। 15 उन्हें चेतावनी देते
हुए यीशु ने कहा, "फ़रीसियों के खमीर और
हेरोदेस के खमीर से सावधान रहना"।
16 उन्होंने आपस में वादविवाद करते हुए
कहा, "हमारे पास तो रोटी नहीं हैं।"
17 यह जान लेने से यीशु ने उन से कहा,
"तुम लोग इस बात पर चर्चा क्यों कर रहे
हो कि तुम्हारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम
अब तक समझ नहीं रहे हो? क्या तुम्हारा
मन अभी भी कठोर है? 18 तुम्हारे आँखें हैं,
क्या तुम देख नहीं सकते हो? और तुम्हारे
पास कान हैं, क्या सुन नहीं पाते हो? क्या
तुम्हें याद नहीं है? 19 मैंने जब पाँच हज़ार
के लिए पाँच रोटियाँ तोड़ीं, तुमने टुकड़ों
के कितने टोकरे उठाए थे? उन्होंने कहा,
"बारह"। 20 और जब मैंने चार हज़ार के लिए
सात रोटियाँ तोड़ी थी, तब तुमने रोटियों के
टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे? वे बोले,
"सात"।
21 यीशु ने उन से कहा, "क्या बात है कि
तुम कुछ भी नहीं समझते हो।"
22 जब यीशु बैतसैदा पहुँचे, एक अन्धे
व्यक्ति को वे उनके पास लाए ताकि, यीशु
उन्हें छुएँ। 23 यीशु उसका हाथ पकड़ कर
शहर के बाहर ले गए। उसकी आँखों में थूका
और हाथ रखने के बाद पूछा कि उसे कुछ
दिख रहा है या नहीं। 24 उस आदमी ने ऊपर
देख कर कहा, "मुझे लोग चलते हुए दिख
रहे हैं, लेकिन जैसे कि पेड़ चल रहे हों।"

25 जब यीशु ने दोबारा उसकी आँखों में
हाथ रख कर ऊपर देखने को कहा, तो वह
साफ़-साफ़ देखने लगा। 26 यीशु ने उसे घर
वापस लौट जाने के साथ-साथ यह कहा कि
वह न तो शहर को जाए और न ही वहाँ किसी
व्यक्ति को बताए।
27 यीशु और उनके शिष्य जब कैसरिया
फ़िलिप्पी नगर को जा रहे थे, रास्ते में शिष्यों
से उन्होंने एक प्रश्न किया, “मेरे बारे में लोगों
के क्या ख्याल हैं?”
28 उन्होंने उत्तर में कहा, कुछ कहते हैं कि
आप यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले हैं, कुछ
एलिय्याह और दूसरे भविष्यद्वक्ताओं में से
एक।
29 यीशु बोले, “तुम मुझे क्या कहते हो?”
पतरस ने कहा, “आप मसीह हैं।”
30 यीशु ने उन्हें यह किसी और को बताने
के लिए मना किया।
31 यीशु उन्हें सिखाने लगे कि मनुष्य का
पुत्र[a] सताए जाने के साथ, बुज़ुर्गों, प्रधान
पुरोहितों और शास्त्रियों द्वारा मार डाला
जाएगा, लेकिन तीसरे दिन जी उठेगा। 32 यह
बात यीशु खुल्लम-खुल्ला कहा करते थे। यह
सुन पतरस यीशु को अलग ले जाकर
डाँटने-डपटने लगा।
33 यीशु ने मुड़ कर अपने शिष्यों को
देखते हुए पतरस को डाँटते हुए कहा, “दूर
हटो, शैतान! तुम परमेश्वर की नहीं लेकिन
इन्सानों की बात पर मन लगा रहे हो।
34 यीशु ने अपने शिष्यों के साथ लोगों को
भी बुलाया उन से कहा, “जो मुझे अपनाना
चाहता है, उसे चाहिए कि अपनी खुदी का
इन्कार करे, अपनी सूली उठाए और मेरी
सुन कर जीना शुरु कर दे। 35 इसलिए कि
जो कोई अपने जीवन को बचाना चाहता
है, वह इसे खो देगा, लेकिन जो मेरे और
मेरे सुसमाचार के लिए अपना जीवन बिता
देना चाहता है, वह इसे बचाएगा। 36 क्योंकि
एक इन्सान यदि सारी दुनिया को हासिल
करे लेकिन अपनी आत्मा को खो दे, तो
क्या फ़ायदा? 37 इन्सान अपनी आत्मा के
बदले में क्या देगा? 38 इसलिए जो कोई इस
व्यभिचारी और दुष्ट पीढ़ी से मुझ से शर्माएगा,
मनुष्य का पुत्र जब अपने पिता की महिमा
और पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएगा, उससे
शर्माएगा।”

9 यीशु ने उन लोगों से कहा, “मैं सच
कहता हूँ कि, जो यहाँ खड़े हैं, उन में
से कुछ मौत को तब तक नहीं चखेंगे जब
तक कि वे परमेश्वर के राज्य को शक्ति के
साथ आते हुए देख न लेंगे।”
2 छः दिन के बाद यीशु, पतरस, याकूब
और यूहन्ना को एक ऊँचे पहाड़ पर ले गए।
वहाँ उनके देखते-देखते उनका रूप बदल
गया। 3 उनके कपड़े बर्फ़ की तरह सफ़ेद
इतने चमकने लगे जितना पृथ्वी पर कोई
भी धोबी सफ़ेदी नहीं ला सकता था। 4 वहीं
एलिय्याह और मूसा भी प्रगट हुए और वे
यीशु से बातें कर रहे थे।
5 पतरस तुरन्त बोल उठा, “गुरु जी हमारे
लिए यहाँ रहना अच्छा है। हम तीन मण्डप
बनाएँगे, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए
और एक एलिय्याह के लिये। 6 वे सभी इतना
डर गए थे कि पतरस बौखला कर कुछ भी
बोल बैठा।

[a] **8.31** मैं खुद

7 एक बादल ने आकर छाया से उन्हें ढँक
लिया। बादल ही में से एक आवाज़ आयी
कि, “यह मेरा प्यारा बेटा है, इसी की सुनो।”
8 अचानक जब उन्होंने चारों तरफ़ देखा तो
वहाँ कोई नहीं था, सिर्फ़ वे और यीशु।
9 जैसे ही वे पहाड़ से नीचे उतरे यीशु ने
उस अनुभव को दूसरों से बताने की तब तक
मनाही की, जब तक कि वह मरे हुओं में
से जी न उठें। 10 जी उठना क्या है, इस पर
वाद-विवाद तो उन्होंने किया, लेकिन इस
विषय पर चुप्पी साध ली।
11 उन लोगों[a] ने पूछा, “शास्त्री यह क्यों
कहते हैं, कि पहले एलिय्याह आएगा?”
12 यीशु ने उत्तर दिया, “यह तो सच है कि
एलिय्याह पहले आकर सब कुछ सुधारेगा।
लेकिन मनुष्य के पुत्र के लिए यह लिखा है
कि वह बहुत दुख उठाएगा और बेइज़्ज़त
किया जाएगा।” 13 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ
कि एलिय्याह आ चुका है और उन्होंने उसके
साथ वह सब किया जैसा उन्होंने चाहा और
जैसा उसके बारे में लिखा भी है।
14 जब यीशु शिष्यों के पास आए उन्होंने
अपने चारों तरफ़ एक बड़ी भीड़ देखी और
शास्त्रियों ने यीशु से सवाल जवाब किए।
15 यीशु को देखते ही लोगों को आश्चर्य हुआ
और दौड़े आए, और प्रणाम किया।
16 यीशु ने शास्त्रियों से पूछा, “तुम उन से
क्या पूछ रहे हो?”
17 भीड़ में से एक ने उत्तर दिया, गुरु जी मैं
अपने बेटे को आपके पास लाया था। उसके
अन्दर एक गूँगी आत्मा है। 18 जब कभी वह
उस पर सवार होती है, उसे पटक देती है।
उसके मुँह में फ़ेन भर आता है और वह अपने
दाँत पीसता है। वह दिन ब दिन कमज़ोर होता
जा रहा है, मैंने आपके शिष्यों से बिनती की
थी लेकिन वे उसे निकाल नहीं पाए।”
19 यीशु बोल उठे, “हे अविश्वासी पीढ़ी
मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा, कब तक
तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास लाओ। ”
20 वे उसे यीशु के पास लाए। जब उस गंदी
आत्मा ने उसे देखा, तुरन्त लड़के को दौरा
पड़ा और वह ज़मीन पर गिर गया और मुँह
में फ़ेन लाते हुए लोटने लगा।
21 यीशु ने उसके पिता से पूछा, “इसकी
हालत ऐसी कब से है? वह बोला, बचपन
से।” 22 अक्सर इसने उसे पानी तथा आग में
ढकेल कर मार डालने की कोशिश की है।
यदि आप कुछ कर सकते हैं, “तो हम पर
दया कीजिए।”
23 यीशु ने उससे कहा, “यदि मैं कर सकता
हूँ, यह क्या बात है! अगर तुम विश्वास करो
तो सब कुछ हो सकता है।”
24 तुरन्त बच्चे के पिता ने उत्तर दिया, “प्रभु
मुझे भरोसा है, मेरे शक को दूर करें।”
25 जब यीशु ने देखा कि लोग दौड़े चले आ
रहे हैं, तब गंदी आत्मा को डाँटते हुए कहा,
“हे गूँगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा
देता हूँ, निकल आ, और फिर कभी प्रवेश न
करना”।
26 वह आत्मा चिल्लायी और भयंकर दौरे के
साथ उसे पटक कर उसमें से निकल गयी।
वह मानो मरा सा रह गया, तथा बहुतों ने

[a] **9.11** शिष्यों

कहा, “वह मर गया है”। 27 लेकिन यीशु ने
उसे अपने हाथ से पकड़ कर उसके पैरों पर
उसे खड़ा किया, तो वह खड़ा हो गया।
28 घर आने पर शिष्यों ने अकेले में उन से
पूछा, “हम उसे क्यों नहीं निकाल सके?”
29 यीशु ने कहा, “इस तरह की आत्मा बिना
प्रार्थना और उपवास बाहर नहीं निकलती
है।”
30 वहाँ से निकल कर वे गलील से होकर
गुज़रे। यीशु ने नहीं चाहा कि वहाँ कोई यह
बात जाने। 31 लोगों को सिखाते हुए यीशु
ने कहा, “मनुष्य का पुत्र लोगों के हाथ
पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे।
उसके मारे जाने के बाद, वह तीसरे दिन जी
उठेगा।
32 वे लोग यह बात समझ न सके और
पूछने के लिए डरते भी थे।
33 फिर यीशु कफ़रनहूम पहुँचे, घर में
उन्होंने पूछा, “तुम आपस में किस बात पर
वाद विवाद कर रहे थे?
34 लेकिन वे खामोश रहे, इसलिए कि
आपस में वे बहस कर रहे थे कि उन में बड़ा
कौन है।
35 यीशु ने उन बारहों को बुलाकर उन से
कहा, यदि कोई व्यक्ति पहला होना चाहे,
तो उसे आखिरी और सब का नौकर बनना
चाहिए।
36 एक बच्चे को सामने लाकर अपनी बाँहों
में ले, यीशु ने कहा, 37 जो कोई ऐसे एक बच्चे
को मेरे नाम से अपनाता है वह मुझे अपनाता
है और जो कोई मुझे अपनाता है, वह मुझे
नहीं लेकिन मेरे भेजने वाले को अपनाता है।
38 यूहन्ना ने उत्तर में कहा, “गुरु जी, हम ने
एक व्यक्ति को देखा जो बिना हमारे साथ
हुए आपके नाम से भूत निकाल रहा था।
इसलिए कि वह हमारे साथ नहीं था हम ने
उसे रोकने की कोशिश की।”
39 लेकिन यीशु ने कहा, उसे रोको मत,
क्योंकि जो व्यक्ति मेरे नाम से आश्चर्यकर्म
करता है, जल्दी ही मेरे खिलाफ़ कुछ नहीं
कहेगा। 40 क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं,
हमारी तरफ़ है। 41 जो कोई मेरे नाम से तुम्हें
एक प्याला पानी देता है कि तुम मसीह के
हो, मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह अपना
प्रतिफल नहीं खोएगा। 42 जो कोई इन छोटों
में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, एक
के लिए रुकावट का कारण बनता है, उसके
लिए यह अच्छा होता कि उसके गले में चक्की
का पाट बाँधकर गहरे समुद्र में धकेल दिया
गया होता।
43 यदि तुम्हारा हाथ तुम्हारे पतन[a] का
कारण बने, उसे काट कर फेंक दो। तुम्हारे
लिए यह अच्छा है कि तुम लूले स्वर्ग में
जाओ बजाए इसके कि दोनों हाथों के साथ
नरक की पीड़ा को भोगो, जो कभी खत्म नहीं
होती है। 44 जहाँ का कीड़ा मरता नहीं है और
पीड़ा[b] खत्म नहीं होती है। 45 यदि तुम्हारा पैर
तुम्हारे बुराई में गिर जाने का कारण बने, इसे
काट कर फेंक दो। तुम्हारे लिए यह भला है
कि तुम लँगड़े जीवन[c] में दाखिल हो, बजाए
इसके कि दोनों पैरों के साथ मौत[d] हासिल
करो। 46 जहाँ का कीड़ा नहीं मरता और आग
नहीं बुझती। 47 यदि तुम्हारी आँख तुम्हें बुराई
में फँसाए इसे निकाल कर फेंक दो। तुम्हारे
लिए यह अच्छा है कि बिना एक आँख स्वर्ग
जाओ, बजाए इसके कि दोनों आँखों के साथ
नरक जाओ। 48 वहाँ का कीड़ा मरता नहीं
है न ही वहाँ की पीड़ा[e] कभी कम होती है।
49 हर एक जन परखा जाएगा और हर एक
की कुर्बानी भी?

[a] **9.43** बुराई में गिरने [b] **9.44** आग [c] **9.45** स्वर्ग [d] **9.45** नरक [e] **9.48** आग

50 नमक अच्छा है, लेकिन यदि नमक
अपना नमकीनपन खो दे, तो फिर उसे कैसे
नमकीन किया जा सकेगा? अपने आप में
नमक रखो और एक दूसरे के साथ मेल से
रहो।”

10 यीशु उठ कर यरदन नदी के उस पार
यहूदिया के इलाके में पहुँचे और
लोग फिर से उनके चारों तरफ़ इकट्ठे हो गए
और यीशु उन्हें शिक्षा देने लगे। 2 इतने में
फ़रीसियों ने परखने के लिए यीशु के पास
आकर पूछा, “क्या पुरुष के लिए यह जायज़
है कि अपनी पत्नी को तलाक दे।”
3 यीशु ने पूछा, “मूसा ने क्या आज्ञा दी
थी?”
4 फ़रीसियों ने कहा, “कि तलाकनामा पूरा
होने के बाद ही एक व्यक्ति तलाक करे।”
5 यीशु ने जवाब में कहा, तुम्हारे मन की
सख़्ती की वजह से उसने ऐसा कहा था।
6 लेकिन शुरुआत से परमेश्वर ने इन्सान को
पुरुष और स्त्री के रूप में बनाया है। 7 इसी
वजह से एक पुरुष अपने, पिता और माता
को छोड़कर पत्नी के साथ जुड़ेगा। 8 दोनों
एक देह हो जाएँगे, तब से वे अलग नहीं
लेकिन ‘एक देह’ कहलाएँगे। 9 इसलिये जिसे
परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे इन्सान न तोड़े।
10 घर पर इसी विषय पर शिष्यों ने सवाल
किए।
11 यीशु ने उन से कहा, “जो आदमी अपनी
पत्नी को छोड़कर दूसरी से विवाह कर लेता
है वह उसके साथ व्यभिचार करता है।”
12 यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से
विवाह कर लेती है, तो वह व्यभिचार करती
है।
13 इसी बीच वे छोटे बच्चों को यीशु के पास
लाए, ताकि यीशु उन्हें छुएँ। लेकिन आने
वालों को शिष्यों ने डाँटा।
14 यीशु को यह देख कर अच्छा नहीं
लगा और उन्होंने कहा, “छोटे बच्चों को मेरे
पास आने दो, उन्हें मना मत करो, क्योंकि
परमेश्वर का राज्य बच्चों के समान मन वालों
के लिए ही है। 15 मैं तुम से सच कहता हूँ, जो
कोई परमेश्वर के राज्य को एक छोटे बच्चे
की तरह नहीं अपनाता, वह उसमें दाखिल
भी नहीं होगा।
16 तब यीशु ने बच्चों को अपनी बाँहों में
लेकर, उन पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया।
17 जब यीशु सड़क पर जा रहे थे, एक जन
दौड़ कर आया और यीशु के सामने घुटने टेक
कर कहा, “हे अच्छे गुरु, स्वर्ग प्राप्ति के लिए
मैं क्या करूँ?”
18 यीशु उस से बोले, “तुम मुझे अच्छा क्यों
कह रहे हो परमेश्वर को छोड़कर कोई भी
भला नहीं है!” 19 आज्ञाएँ तो तुम्हें मालूम हैं,
व्यभिचार मत करना, खून मत करना, चुराना
नहीं, झूठी गवाही न देना, धोखा मत देना
और माता-पिता की इज़्ज़त करना।
20 उसने यीशु से जवाब में कहा, “गुरु जी!
यह सब तो मैं बचपन से करता आया हूँ।”
21 यीशु प्रेम से भर गए और उससे कहा, “तुम
में एक कमी है। जाओ जो कुछ तुम्हारे पास
है, बेच दो और गरीबों में बाँट दो। अपना
क्रूस उठा कर मेरी बातें मानकर जीवन
जिओ, तब तुम स्वर्ग की दौलत पाओगे।”

22 यह सुन वह दुखी हुआ और वैसी ही
हालत में घर चला गया, क्योंकि वह बहुत
अमीर था।
23 चारों तरफ़ देख कर यीशु ने अपने शिष्यों
से कहा, जो लोग अमीर हैं, उनके लिए स्वर्ग
में दाखिल होना कितना मुश्किल है।
24 शिष्य यीशु के बातों पर आश्चर्य कर
रहे थे लेकिन यीशु ने फिर उत्तर में कहा,
“बच्चो, जो दौलत पर भरोसा रखते हैं उनके
लिए स्वर्ग के राज्य में दाखिल होना कितना
मुश्किल है। 25 एक ऊँट सुई के छेद में से
गुज़र सकता है पर एक अमीर का स्वर्ग में
प्रवेश करना कठिन है।
26 आपस ही में वे बहुत ज़्यादा आश्चर्य में
पड़ कर कहने लगे, “मुक्ति फिर कौन पा
सकता है?”
27 उनकी तरफ़ देखते हुए यीशु बोले,
“इन्सान के लिए यह काम मुश्किल है लेकिन
परमेश्वर तो कुछ भी कर सकते हैं।”
28 पतरस यीशु से कहने लगा, “देखिए, सब
कुछ छोड़ कर हम आपके हो गए हैं।”
29 यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुम से सच कहता
हूँ कि ऐसा कोई नहीं है, जिस ने मेरे और
मेरी खुशी की खबर सुनाने के कारण घर,
भाई बहन, या माँ, या पत्नी, या बच्चे, या
ज़मीन जायदाद को छोड़ा हो, 30 और सताव
के साथ इस दुनिया में सौ गुना-घर, भाई,
बहनें, माँ, बच्चे, ज़मीन, जायदाद न पाए।
हाँ, भविष्य में सदा काल का जीवन भी
उसका होगा। 31 लेकिन बहुत से जो पहले
हैं आखिरी होंगे और आखिर वाले पहले।
32 वे यरूशलेम की तरफ़ सड़क पर चले
जा रहे थे और यीशु उनके आगे थे। वे
आश्चर्यचकित थे और उनके पीछे आने वाले
डरे हुए थे। यीशु ने बारहों को अलग बुलाया
और उन्हें वह सब बताने लगे जो उनके साथ
होने वाला था।
33 देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं और मैं[a]
प्रधान पुरोहितों और शास्त्रियों के हाथ सुपुर्द
किया जाऊँगा। वे लोग मुझे फाँसी की सज़ा
देंगे और गैर यहूदियों के हाथ में दे देंगे। 34 वे
मेरा मज़ाक करके कोड़े लगाएँगे, थूकेंगे और
मार भी डालेंगे।
35 ज़ब्दी के बेटे याकूब और यूहन्ना बोले,
“गुरु जी, हम चाहते हैं कि हमारी मर्जी के
मुताबिक ही आप हमारे लिए करें”
36 यीशु ने पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए करूँ?”
37 वे बोल उठे, “आप ऐसा होने दें कि
भविष्य के आपके राज्य[b] में हम में से एक
आपके बायीं और दूसरी आपके दायीं तरफ़
बैठे।”
38 लेकिन यीशु ने कहा, तुम नहीं जानते,
कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी
सकोगे, जो मैं पीने जा रहा हूँ? और मैं जिस
पीड़ा में डूबने[c] जा रहा हूँ, क्या तुम उसे सह
सकते हो?”
39 वे बोल उठे, “हाँ बिलकुल सह सकते
हैं।” यीशु ने उन से कहा, “ज़रूर तुम वह
प्याला पीओगे, जो मैं पीने पर हूँ और उस
पीड़ा में डूबोगे जिस में मैं डूबने जा रहा हूँ।
40 यह मेरे हाथ में नहीं है कि किस को अपने
बाएँ या दाएँ बैठाऊँ लेकिन यह जिन के लिए
तैयार किया गया है, उन्हें ही मिलेगा।
41 यह बात जब बाकी शिष्यों ने सुनी, तो
वे याकूब और यूहन्ना से बड़े नाराज़ हुए।
42 लेकिन यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर
कहा, “तुम्हें यह मालूम है कि गैर यहूदियों में
अधिकारी लोग अपना अधिकार जमाते हैं
और लोगों के ऊपर शासन करते हैं। 43 ऐसा

[a] **10.33** मनुष्य का पुत्र [b] **10.37** शासन काल [c] **10.38** बपतिस्मा लेने

तुम्हारे बीच नहीं होना चाहिए। तुम में से जो
कोई दूसरे से बड़ा होना चाहे, वह पहले दूसरे
का सेवक बने। 44 तुम में से जो कोई प्रधान
बनना चाहे, वह पहले सभी का गुलाम[a] बने।
45 यहाँ तक कि मैं[b] सेवा करवाने नहीं आया
लेकिन सेवा करने और बहुतों की मुक्ति के
लिए अपने आपको न्यौछावर[c] करने आया
हूँ?।
46 वे सभी यरीहो आए। जब वह अपने
शिष्यों के साथ यरीहो को छोड़ने वाले थे,
रास्ते में तिमाई का अन्धा बेटा बरतिमाई
सड़क के किनारे बैठा भीख माँग रहा था।
47 जब उसे यह मालूम पड़ा कि नासरी यीशु
उसी रास्ते गुज़र रहे हैं, तो ज़ोर-ज़ोर से
चिल्लाने लगा, “हे यीशु दाऊद के बेटे, मुझ
पर कृपा कीजिए।”
48 बहुतों ने उसे डाँटा कि चुप हो जाए,
लेकिन वह और ऊँची आवाज़ से चिल्लाया,
“दाऊद के बेटे, मुझ पर दया करें।”।
49 यीशु रुक गए और आज्ञा दी कि उसे
उनके पास लाया जाए। लोगों ने अन्धे
व्यक्ति को बुलाकर कहा, “हिम्मत रखो,
उठ खड़े हो, यीशु तुम्हें बुला रहे हैं।” 50 अपने
चोगे को एक किनारे फेंक वह उठा और यीशु
के पास आ गया।
51 यीशु ने उससे पूछा, “तुम क्या चाहते हो
कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?” अन्धे आदमी ने
कहा, “गुरु जी, मैं देखना चाहता हूँ।”
52 यीशु ने कहा, “जाओ तुम्हारे विश्वास ने
तुम्हें अच्छा कर दिया है।” तुरन्त वह देखने
लगा और यीशु के साथ चल पड़ा।

11 जब वे यरूशलेम के पास बैतफ़गे
और बैतनिय्याह पहुँचे, जैतून
पहाड़ी पर यीशु ने दो शिष्यों को भेजा। 2 उन
से कहा, “कि सामने वाले गाँव में जाओ।
जैसे ही तुम वहाँ पहुँचो, तुम एक गदही के
बच्चे को, जिस पर कभी कोई नहीं बैठा है,
बँधा हुआ पाओगे। उसे खोलकर ले आओ।
3 यदि कोई तुम से कुछ कहे, “यह तुम क्यों
कर रहे हो। तो कहना कि प्रभु को इसकी
ज़रूरत है। वह तुरन्त तुम्हें ले जाने देगा।”
4 वे लोग वहाँ से निकल पड़े और वहाँ
पहुँचने पर दरवाज़े के पास गदही के बच्चे
को बँधा पाया और उसे खोला। 5 वहाँ खड़े
कुछ लोगों ने उन से कहा, “तुम क्यों गदही
के बच्चे को खोल रहे हो? 6 जब उन्होंने यीशु
के आदेश के बारे में बताया, तब उन लोगों
ने गदही को ले जाने दिया।
7 उस गदही के बच्चे को यीशु के पास
लाकर उन्होंने अपने कपड़े उस पर डाले।
8 बहुतों ने अपने कपड़े सड़क पर बिछाए।
दूसरों ने पेड़ों की डालियाँ काटीं और सड़क
पर बिछा दीं। 9 आगे जाने वाले और पीछे
जाने वाले लोग चिल्लाते गए, “होशाना! धन्य
वह है जो प्रभु के नाम से आता है। 10 हमारे
पिता दाऊद का राज्य धन्य है, जो प्रभु के
नाम से आता है। आकाश में होशाना।।”
11 यीशु यरूशलेम में प्रार्थना भवन में आए।
उन्होंने चारों तरफ़ देखा, इसलिए कि बहुत
देर हो चुकी थी, वह शिष्यों के साथ
बैतनिय्याह को चल पड़े। वह बारहों के साथ
बैतनिय्याह पहुँचे।
12 अगले दिन बैतनिय्याह से निकलने के
बाद उन्हें भूख लगी। 13 अंजीर के पेड़ को दूर
से देख कर, जिस में पत्तियाँ थीं, यीशु पास में
गए ताकि कुछ मिल जाए। जब यीशु उसके
पास आए तो उसमें पत्तियों के अलावा कुछ
नहीं पाया, क्योंकि वह अंजीर का समय नहीं
था।

[a] **10.44** दास [b] **10.45** मनुष्य का पुत्र [c] **10.45** बलिदान

14 यीशु गुस्से में बोले, “आगे से कोई भी
तुम्हारा फल न खाए।” यीशु के शिष्य यह
सब सुन रहे थे।
15 यरूशलेम पहुँचने पर यीशु प्रार्थना भवन
पहुँचकर खरीदने-बेचने वालों को खदेड़ने
लगे। यीशु ने मुद्रा बदलने वालों की मेज़ों
को और कबूतर बेचने वालों की कुर्सियों
को उलट दिया। 16 यीशु ने प्रार्थना भवन के
अहाते में से बर्तन लेकर गुज़रने वालों पर भी
रोक लगानी चाही।
17 यीशु ने यह भी पूछा, “क्या यह लिखा
नहीं है, मेरा घर सारे देशों के लिए प्रार्थना
का घर कहलाएगा। लेकिन तुम लोगों ने इसे
चोरों का अड्डा बना डाला है।”
18 यह सब सुन कर शास्त्री और प्रधान
पुरोहित यीशु के नाश करने की योजना बनाने
लगे, क्योंकि यीशु की शिक्षा से लोगों के
प्रभावित हो जाने से वे डरने लगे थे।
19 शाम के समय यीशु नगर से बाहर जाया
करते थे। 20 सुबह के समय जब वे उधर से
जा रहे थे, तब उन्होंने अंजीर के पेड़ को जड़
से सूखा पाया। 21 पतरस को याद आते ही
उसने कहा, “गुरु जी, देखिए! जिस अंजीर
के पेड़ को आपने शाप दिया था वह सूख
गया है।”
22 यीशु ने उत्तर में कहा, “परमेश्वर पर
भरोसा रखो।” 23 मैं तुम से सच कहता हूँ कि
जो कोई बिना शक किए इस पहाड़ से कहे,
24 “यहाँ से हट कर समुद्र में जा गिरो, और
यह विश्वास करे कि जैसा कहता है वैसा
हो जाएगा। वह मुँह माँगा पाएगा।
25 प्रार्थना करते समय अगर तुम्हारे मन में
किसी के लिए कुछ शिकायत है, माफ़ कर
दो ताकि तुम्हारे पिता जो स्वर्ग में हैं, तुम्हारे
गुनाहों को माफ़ करें। 26 लेकिन अगर तुम
माफ़ न करो तुम्हारे स्वर्गिक पिता भी तुम्हें
माफ़ नहीं करेंगे।”
27 इसके बाद वे यरूशलेम लौट आए। जब
यीशु प्रार्थना भवन में थे, प्रधान, पुरोहित,
शास्त्री और बुज़ुर्ग अगुवे आए 28 वे यीशु से
बोले, “यह सब आप किस के अधिकार से
कर रहे हैं? यह सभी करने के लिए आपको
अधिकार किस ने दिया है?”
29 यीशु ने जवाब में कहा, “मैं भी तुम से
एक सवाल पूछता हूँ, मुझे जवाब दो, तो मैं
भी तुम्हें जवाब दूँगा।” 30 यह बताओ कि
यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग से था या पृथ्वी
से?
31 वे आपस में बातचीत कर रहे थे कि
यदि कहते हैं कि परमेश्वर की तरफ़ से तो
यीशु कहेंगे कि हम ने फिर उसकी क्यों नहीं
मानी। 32 यदि हम कहेंगे इन्सान की तरफ़ से
तो लोग जो यूहन्ना को नबी मानते थे उनके
खिलाफ़ हो जाएँगे।
33 उन लोगों ने यीशु से कहा, “हमें नहीं
मालूम।” यीशु ने भी तब कहा, “मैं भी तुम्हें
नहीं बताता कि जो मैं करता हूँ वह किस के
अधिकार से करता हूँ।”

12 यीशु उन लोगों से दृष्टान्तों में बात
करने लगेः एक आदमी ने अंगूर का
एक पौधा लगाया, उसके लिए गड्ढा खोदा,
और एक बुर्ज़ बनाया। इसके बाद अंगूर के
किसानों को किराए पर देकर दूर देश चला
गया। 2 फ़सल पकने के समय उसने एक
नौकर को भेजा ताकि किसान अंगूर की खेती

से निकलने वाली फ़सल का एक हिस्सा उसे दे दें। 3 लेकिन किसानों ने उसे पकड़ा, मारा और वापस खाली हाथ भेज दिया।

4 फिर से उसने एक दूसरे नौकर को उसके पास भेजा। उन लोगों ने उस पर पत्थर फेंक कर सिर घायल किया और बेशर्मी से पेश आकर उसे भी वापस घर भेज दिया। 5 उसने एक और नौकर भेजा, उसे भी उन लोगों ने मार डाला। इस तरह का बर्ताव किसानों ने बहुतों के साथ किया, पिटाई की या मार भी डाला।

6 अन्त में मालिक ने अपने प्यारे एकलौते बेटे को उसके पास यह सोच कर भेजा, वे लोग मेरे बेटे की इज़्ज़त करेंगे।

7 पर उन किसानों ने आपस में कहा, 'यही वारिस है। आओ इसे मार डालें, तब सारी जायदाद अपनी हो जाएगी।' 8 उन्होंने उसे पकड़ा, पिटाई की और मार डालने के बाद बगीचे के बाहर फेंक दिया।

9 इसलिये बगीचे का मालिक अब क्या करेगा? वह आकर किसानों को बर्बाद कर सारी अंगूर की खेती दूसरों को दे देगा। 10 क्या तुमने पवित्रशास्त्र[a] का अध्ययन नहीं किया? 'जिस पत्थर को राजमिस्रियों[b] ने रद्द कर दिया था, वही मुख्य कोने का सिरा हो गया? 11 यह परमेश्वर का काम है और हमारी निगाहों में अजीब अजीब है।

12 तब से वे यीशु को पकड़ने की तलाश में रहने लगे। लेकिन उन्हें लोगों का डर था। उन्हें मालूम था कि वह दृष्टान्त उन्हीं के बारे में था और वे यीशु को छोड़कर चले गए। 13 यीशु को बातों में फँसाने के लिए उन लोगों ने फिर कुछ फ़रीसियों और हेरोदियों को भेजा।

14 आकर इन लोगों ने यीशु से कहा, "गुरु जी, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और कौन क्या सोचता या कहता है इस से आपको कुछ लेना-देना नहीं है। आप किसी के बाहरी रंग-रूप को नहीं देखते, लेकिन स्वर्गिक सच्चाई सिखाते हैं। 15 क्या हम कैसर को टॅक्स[c] दें या नहीं?" इन लोगों के कपट को जान कर यीशु ने कहा, "तुम मुझे क्यों परख रहे हो? ज़रा एक सिक्का मुझे दिखाओ।"

16 वे सिक्का लाए और यीशु उन से बोले, "इस में किसकी तस्वीर बनी हुयी है?" उन्होंने कहा, "कैसर की"।

17 यीशु ने उत्तर दिया, "जो कैसर का है, वह उसे दो और जो परमेश्वर का है वह उसे।" वे सब इस उत्तर से चकित हुए।

18 सदूकियों ने, जो जी उठने में विश्वास नहीं करते हैं, आकर यीशु से कहा, 19 "गुरु जी मूसा ने हमें यह आदेश दिया था कि यदि कोई व्यक्ति बिना बच्चे पैदा किए मर जाता है और उसके पीछे, पत्नी रह जाती है, तो उसके भाई को अपनी भाभी से विवाह करके अपने भाई के वंश को बढ़ाना चाहिए। 20 सात भाई थे। पहला निः सन्तान मर जाता है, 21 अगला भाई पहले की पत्नी से विवाह तो करता है, लेकिन वह भी निःसन्तान मर जाता है। तीसरे के साथ भी ऐसा ही होता है। 22 सातों भाई एक ही स्त्री से विवाह करते हैं और उनके कोई बच्चा नहीं होता है। अन्त में वह स्त्री भी मर जाती है। 23 इसलिये जब सभी जी उठेंगे उस समय वह स्त्री किसकी पत्नी होगी? इसलिए कि सातों ने उससे विवाह किया था।"

24 यीशु ने जवाब में उन से कहा, "तुम गलती इसलिए कर रहे हो क्योंकि तुम न तो

[a] **12.10** बाइबल [b] **12.10** बनाने वालों [c] **12.15** कर

बाइबल[a] को जानते हो और न ही परमेश्वर
की ताकत को। 25 इसलिए कि जब लोग मरे
हुओं में से जी उठेंगे उन में शादी-ब्याह नहीं
होंगी, वे लोग स्वर्ग में स्वर्गदूतों की तरह
होंगे। 26 यह सच्चाई कि मरे हुए जी उठेंगे, क्या
तुमने मूसा की किताब में नहीं पढ़ी? झाड़ी में
रोशनी की घटना में परमेश्वर ने किस तरह
बातें की, मैं अब्राहम, इसहाक और याकूब
का परमेश्वर हूँ। 27 वह मरे हुओं के नहीं,
जीवित लोगों के परमेश्वर हैं। इसलिए तुम
बड़े धोखे में पड़े हो।"
28 उन में से एक शास्त्री[b] ने यह सुन कर
और देख कर कि यीशु बड़ी कुशलता से
प्रश्नों का उत्तर देते हैं, आकर पूछा, हे गुरु!
सब आज्ञाओं में पहली कौन सी है?
29 यीशु ने कहा, "सभी आज्ञाओं में से
पहली यह है, 'हे इस्राएल सुनो हमारे
प्रभु परमेश्वर एक हैं।' 30 तुम अपने प्रभु
परमेश्वर से दिल, जान, दिमाग और ताकत
से प्रेम करना। यही पहली आज्ञा है। 31 दूसरी
ऐसी है, जैसा तुम अपने से प्रेम रखते हो,
अपने पड़ोसी से भी रखना इन दोनों से बड़ी
और कोई आज्ञा नहीं।"
32 शास्त्री ने कहा, "अच्छे गुरु आपने सही
कहा। एक ही परमेश्वर हैं, उनके अलावा
और कोई नहीं हैं। 33 अपने दिल, दिमाग,
जान और ताकत के साथ उन से प्रेम करना
और पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना सारे
होम बलि और कुर्बानियों से बढ़ कर है।"
34 यीशु ने सही जवाब सुन कर उस से कहा,
"तुम परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं हो।"
35 इसके बाद फिर किसी ने यीशु से सवाल
पूछने की हिम्मत नहीं की। प्रार्थना भवन
में सिखाते समय यीशु बोले, "शास्त्री क्यों
कहते हैं कि यीशु मसीह दाऊद के बेटे
हैं? 36 इसलिए कि स्वयं दाऊद ने पवित्र
आत्मा की मदद से कहा था कि प्रभु ने मेरे
प्रभु से कहा, मेरी दाहिनी ओर बैठो जब
तक मैं तुम्हारे दुश्मनों को धूल न चटा दूँ।
37 इसलिए, दाऊद अगर प्रभु कहता है, तो
फिर वह उसका बेटा कैसे हुआ? यह सब
आम जनता भी सुन रही थी।
38 शिक्षा देते समय यीशु ने कहा,
"शास्त्रियों से संभल कर रहना। लम्बे-लम्बे
चोगे पहने बाज़ार में वे लोगों से नमस्कार
सुनना माँगते हैं। 39 और त्यौहारों में सब से
बढ़िया कमरों और आराधनालय में पहली
कुर्सी की ताक में वे रहा करते हैं। 40 लेकिन
ये लोग लम्बी प्रार्थनाओं का बहाना करके,
विधवाओं के घर उजाड़ देते हैं। ये लोग
ज़्यादा बड़ी सज़ा पाएँगे।
41 यीशु कोषागार के पास ही बैठे हुए थे
और दान पेटी में लोगों को दान देते देख रहे
थे। बहुत से अमीर लोग पेटी में बड़ी रकम
डाल रहे थे। 42 एक गरीब विधवा ने आकर
दो ताँबे के सिक्के डाले जो एक अधेले के
बराबर थे।
43 अपने शिष्यों को बुलाकर यीशु बोले,
"मैं सच कहता हूँ कि जो लोग दान पेटी में
डाल रहे हैं, उन में से सब से ज़्यादा इस गरीब
विधवा ने डाला है। 44 इसलिए कि सभी ने
अपनी बढ़ती में से दिया है, लेकिन इसने

[a] **12.24** पवित्रशास्त्र [b] **12.28** यहूदी धर्म के ज्ञाता

अपनी गरीबी में अपनी सारी ज़िन्दगी की
कमाई डाल दी है।”

13 जैसे ही यीशु प्रार्थना भवन के बाहर
आए, उनके एक शिष्य ने उन से
कहा, “गुरु जी, देखिए यहाँ किस तरह के
पत्थर और इमारतें हैं।”
2 यीशु बोल उठे, “क्या तुम इन इमारतों की
बात कर रहे हो?” यहाँ ऐसा कोई पत्थर नहीं
है जो नीचे फेंका नहीं जाएगा।
3 जब यीशु जैतून के पहाड़ पर बैठे थे,
पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने
अकेले में उन से पूछा, 4 “हमें यह बताइए
कि ऐसा कब होगा? और इन बातों के पूरा
होने के समय का कौन सा चिन्ह होगा?
5 जवाब में यीशु ने उन से कहा, “ध्यान
रखना कि तुम्हें कोई धोखा न दे। 6 इसलिए
कि मेरे नाम से बहुत से लोग आकर मसीह
होने का दावा कर लोगों को बहका देंगे।
7 जब तुम युद्ध और युद्ध की आवाज़ सुनो,
तो घबरा मत जाना क्योंकि इन सब बातों का
होना ज़रूरी है। लेकिन यह अन्त का समय
नहीं होगा। 8 एक देश दूसरे देश के खिलाफ़
और एक राज्य दूसरे राज्य के खिलाफ़ उठ
खड़ा होगा। अलग-अलग जगहों पर भूकम्प,
आकाल और गड़बड़ियाँ होंगी। यह सब
पीड़ा की शुरुआत ही होगी।
9 लेकिन तुम लोग सावधान रहना, क्योंकि
वे तुम्हें महासभा को सौंप देंगे और तुम
पंचायतों में पीटे जाओगे। मेरी खातिर तुम्हें
अधिकारियों और राजाओं के सामने लाया
जाएगा, ताकि उनके सामने तुम मेरे लिए
गवाह ठहरो।
10 सुसमाचार को सभी देशों में सुनाया जाना
ज़रूरी है।
11 लेकिन जब वे तुम्हें ले जाकर सौंप दें
तब पहले से इस बात कि फ़िक्र मत करना,
कि तुम क्या बोलोगे या क्या सोच कर तैयार
रहना है। लेकिन उस समय तुम्हें जो कुछ
दिया जाए, बोलना, क्योंकि बोलने वाले तुम
नहीं लेकिन पवित्र आत्मा है।
12 भाई अपने भाई को और पिता अपने
बेटे को मरवा देगा। बच्चे अपने माता-पिता
की खिलाफ़त करेंगे और उन्हें मरवा भी
डालेंगे। 13 मेरे नाम के खातिर लोग तुम से
घृणा करेंगे।
14 लेकिन जो अन्त तक सहेगा, वही
बचेगा। लेकिन जब तुम उस उजाड़ने वाली
वस्तु, जिस के बारे में दानिय्येल नबी ने
बताया था, वहाँ खड़ी देखो जहाँ इसे नहीं
होना चाहिए, तब यहूदिया के लोगों को भाग
कर पहाड़ों पर चला जाना चाहिए। 15 जो
लोग घर की छत पर हों उन्हें न ही नीचे
उतरना चाहिए और न घर में से कुछ लेने
के लिए भीतर जाना चाहिए। 16 जो व्यक्ति
अपने खेत में हो उसे अपना कपड़ा लेने के
लिए वापस नहीं जाना चाहिए। 17 लेकिन
शोक है गर्भवती महिलाओं और दूध पिलाने
वाली माताओं पर। 18 यह प्रार्थना करना कि
यह सब सर्दी के दिनों में न हो।
19 क्योंकि इन दिनों में ऐसी पीड़ा होगी जैसी
कि दुनिया की शुरुआत से न तो हुयी और न
ही कभी होगी। 20 यदि प्रभु इन दिनों को कम
न करते तो कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता
था, लेकिन चुने हुए लोगों के लिए इन दिनों
को कम किया है।
21 तब यदि कोई तुम से कहे, ‘देखो, यह
रहा मसीह, वह है मसीह, तो उनकी बातें
को न मानना। 22 इसलिए कि झूठे मसीह
और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और

चिन्ह और चमत्कार दिखाएँगे ताकि लोगों
को गुमराह करें यहाँ तक कि चुने हुओं को
भी। 23 लेकिन सावधान रहना, मैंने पहले ही
से तुम्हें सब कुछ बता दिया है,
24 लेकिन उन दिनों में पीड़ा के बाद, सूरज
की रोशनी जाती रहेगी और चाँद भी रोशनी न
देगा। 25 आकाश से सितारे गिरने लगेंगे और
आकाश की ताकतें हिलायी जाएँगी।
26 तब वे मनुष्य के पुत्र को बड़ी शक्ति
और शान[a] के साथ बादलों पर आते देखेंगे।
27 तब परमेश्वर अपने स्वर्ग दूतों को, अपने
चुने हुओं को चारों दिशाओं से इकट्ठे करने के
लिए भेजेंगे, ताकि पृथ्वी के दूर से दूर तक
के लोगों को इकट्ठा करें।
28 अंजीर के पेड़ से एक दृष्टान्त सीखो।
जैसे ही इसकी डालियाँ कोमल हो जाती हैं
और पत्तियाँ निकलती हैं तुम समझ जाते हो
कि गर्मी का मौसम पास है। 29 इसी तरह जब
तुम इन घटनाओं को होते देखो, तो जान लेना
कि यीशु आने वाले हैं बल्कि दरवाज़े पर हैं।
30 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक यह
सब बातें पूरी न हो जाएँ, यह पीढ़ी खत्म
नहीं होगी। 31 आकाश और पृथ्वी समाप्त
हो जाएँगे, लेकिन मेरी बातें बिना पूरी हुए
नहीं रह सकती। 32 लेकिन उस पल के बारे
में कोई नहीं जानता, यहाँ तक कि न स्वर्ग
के स्वर्गदूत, न पुत्र[b] केवल परमेश्वर पिता
जानते हैं।
33 सावधान रहो, जागते और प्रार्थना करते
रहो, क्योंकि तुम्हें निश्चित समय मालूम नहीं
है। 34 मनुष्य का पुत्र[c] एक ऐसे जन की तरह
है जो अपने घर से कहीं दूर है। जिस ने घर
छोड़ने से पहले अपने सेवकों में से हर एक
को अधिकार और ज़िम्मेदारी दी और द्वार
रक्षक को जागते रहने के लिए कहा।
35 इसलिये सतर्क रहो, क्योंकि तुम्हें मालूम
नहीं। कब वह[d] आएगा - शाम को, बीच रात,
भोर को या सुबह। 36 कहीं ऐसा न हो कि वह
अचानक आए और तुम्हें सोता पाए। 37 जो
मैं तुम से कहता हूँ, वही सब से कहता हूँ,
जागते रहो।"

14 फ़ह का त्यौहार और अखमीरी रोटी
के त्यौहार में दो दिन बाकी थे और
प्रधान पुरोहित और शास्त्री इस ताक में थे
कि यीशु को धोखे से कैसे पकड़ें और मार
डालें। 2 लेकिन इन लोगों ने कहा, "त्यौहार
के दिन नहीं, नहीं तो बड़ा बवाल खड़ा हो
जाएगा।"
3 जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कुष्ट रोगी
के घर में खाना खाने बैठे हुए थे, एक महिला
खुशबूदार इत्र के बर्तन के साथ आयी[e] उसने
बर्तन को तोड़ कर यीशु के सिर पर इत्र
उण्डेल दिया। 4 उन में से कुछ लोगों ने
नाराज़गी दिखाते हुए कहा, "इस इत्र को
क्यों बर्बाद किया गया? 5 इसे तीन सौ चाँदी
के सिक्कों में बेच कर गरीबों की मदद की
जा सकती थी। कई लोगों ने इस बात की
शिकायत की।
6 यीशु बोले, "उसे क्यों तंग करते हो? उसे
छोड़ दो। उसने मेरे लिए अच्छा काम किया
है। 7 इसलिए कि गरीब लोग तो तुम्हारे साथ
हमेशा रहेंगे, जब कभी तुम चाहोगे उनकी
मदद कर सकोगे। लेकिन मैं तुम्हारे साथ
हमेशा नहीं रहूँगा। 8 उसने वह किया, जो वह
कर सकती थी। इसके पहले कि मैं दफ़नाया
जाऊँ, उसने मेरा अभिषेक किया है। 9 मैं तुम
से सच कहता हूँ कि इस दुनिया में जहाँ कहीं
खुशी की खबर दी जाएगी, जो कुछ उसने
किया है, लोग उसकी याद करेंगे।"

[a] **13.26** महिमा [b] **13.32** मैं [c] **13.34** मैं खुद [d] **13.35** घर का मालिक [e] **14.3** यह बहुत कीमती था

10 यहूदा इस्करियोती जो बारह में से एक
था, यीशु को उनके हाथ पकड़वाने के
लिए प्रधान पुरोहितों के पास पहुँचा। 11 जब
उन्होंने यह सुना, वे खुश हुए और कुछ रकम
देने की प्रतिज्ञा की। सही समय आने पर वह
यीशु को पकड़वाने वाला था।
12 अखमीरी रोटी के त्यौहार के पहले दिन
जब फ़सह का मेम्ना मारा जाना था, यीशु के
शिष्यों ने पूछा, "आप कहाँ चाहते हैं कि हम
फ़सह खाने की तैयारी करें?"
13 यीशु ने दो शिष्यों को यह कह कर
भेजा, "नगर में जाओ, और तुम्हें पानी के
मटके लिए हुए एक व्यक्ति मिलेगा, उसके
साथ हो लेना। 14 जिस घर में वह दाखिल
हो, उस मकान मालिक से कहना, "कि गुरु
जानना चाहते हैं कि वह मेहमान घर कहाँ
है, जहाँ अपने शिष्यों के साथ वह फ़सह
खाएँगे? 15 वह तुम्हें एक बड़ा तैयार किया
हुआ कमरा दिखला देगा, वहीं हम सब के
लिए तैयारी करना।"
16 यीशु के शिष्य वहाँ से चल पड़े, नगर में
आए और जैसा उनको बताया गया था, सब
कुछ वैसा ही पाया। उन्होंने फ़सह की तैयारी
की। 17 शाम को वह बारहों के साथ आए।
18 जब वे यीशु के साथ बैठे खा रहे थे, यीशु
ने कहा, "मैं सच-सच कहता हूँ, कि मेरे साथ
खाने वालों में से एक मुझे धोखा देगा।"
19 वे सभी दुखी हुए और एक दूसरे से कहने
लगे, क्या वह मैं हूँ?, दूसरा बोला, "क्या वह
मैं हूँ?"
20 यीशु ने जवाब में कहा, बारहों में से एक
जन है, जो बर्तन में मेरे साथ हाथ डाल रहा
है। 21 जैसा मनुष्य के पुत्र के बारे में लिखा
है, वैसा तो उसके साथ होगा ही, लेकिन
उस व्यक्ति पर अफ़सोस, जिस के द्वारा वह
पकड़वाया जाएगा। अच्छा होता यदि वह
व्यक्ति पैदा ही नहीं हुआ होता।
22 जब वे खा ही रहे थे यीशु ने रोटी ली,
और आशीष दी। फिर यीशु तोड़ कर उन्हें
देते गए और कहा, "लो खाओ, यह मेरी देह
है।"
23 यीशु ने प्याला लिया, धन्यवाद करके
उन्हें दिया और सभी ने उस में से पीया।
24 यीशु ने उन से कहा, "यह नई वाचा के
खून को दिखाता है, जो बहुत से लोगों के
लिए बहाया जाने वाला है। 25 मैं तुम से सच
कहता हूँ, जब तक कि परमेश्वर के राज्य में
मैं नए अंगूर का रस न पीऊँ, मैं फिर अंगूर
का रस नहीं पीऊँगा।"
26 गीत गाने के बाद वे सब जैतून के पहाड़
पर चले गए।
27 यीशु ने उन से कहा, "इसी रात तुम सब
मेरी खातिर ठोकर खाओगे। क्योंकि लिखा
है, 'मैं चरवाहे को मारूँगा, और भेड़ें बिखर
जाएँगी।' 28 मेरे जी उठने के बाद, तुम से
पहिले मैं गलील जाऊँगा।"
29 लेकिन पतरस बोल उठा, चाहे, सभी
ठोकर खाएँ मैं तो टस से मस नहीं होऊँगा।
30 यीशु बोले, "मैं सच-सच कहता हूँ, आज
ही रात, इसके पहले कि मुर्गा बाँग दे, तुम
तीन बार मेरा इन्कार कर चुके होगे।"
31 उसने ज़ोर डालते हुए उन से कहा, "चाहे
मुझे आपके साथ मरना भी पड़े मैं आपका
इन्कार नहीं करूँगा।" यह बात सभी ने
दोहरायी।
32 वे सभी गतसमनी नामक स्थान पर
आए।
33 वहाँ यीशु शिष्यों से बोले, "तुम यहीं
बैठो जब मैं प्रार्थना करता हूँ।" पतरस,
याकूब और यूहन्ना को यीशु ने साथ लिया,

यीशु अपने मन में बहुत परेशान और व्याकुल
हो रहे थे। 34 यीशु ने उन से कहा, मेरा मन
बहुत दुखी है, और लगता है मेरी जान निकल
जाएगी। यहीं ठहरो और जागते रहो।
35 थोड़ी दूर जाकर यीशु ज़मीन पर
नतमस्तक हो गए और यह बिनती की, "कि
यदि हो सके तो यह समय खत्म हो जाए।"
36 यीशु ने कहा, "अब्बा, पिता, आपके लिए
सब कुछ संभव है। यह प्याला मुझ से दूर कर
दीजिए। फिर भी मेरी नहीं लेकिन आपकी
इच्छा पूरी हो।"
37 वापस आने पर यीशु ने सभी को सोते
पाया और पतरस से कहा, "शमौन, क्या तुम
सो रहे हो? क्या एक घण्टे भी तुम मेरे साथ
जाग न सके?" 38 जागते और प्रार्थना करते
रहो, ताकि तुम प्रलोभन में न पड़ो। आत्मा
तो तैयार है लेकिन देह कमज़ोर है। 39 फिर
से यीशु आगे गए और प्रार्थना की और वही
शब्द कहे।
40 वापस लौटने पर यीशु ने फिर उन्हें सोते
पाया, उनकी आँखें भारी थीं और वे नहीं
जानते थे कि क्या जवाब दें। 41 तीसरी बार
यीशु आए और उन से बोले, "क्या तुम अब
तक सो रहे हो, और आराम कर रहे हो?
काफ़ी हो चुका। वह समय आ चुका है देखो,
मनुष्य का पुत्र अपराधियों के हाथ धोखे से
सौंपा जाएगा। 42 उठो, यहाँ से चलें। देखो,
मुझे धोखा देने वाला पास ही में है।"
43 यीशु यह कह ही रहे थे, बारहों में से एक,
यहूदा आया। उसके साथ प्रधान पुरोहित
और शास्त्रियों द्वारा भेजे गए लोगों की एक
बड़ी भीड़ थी। उनके हाथों में तलवार और
लाठियाँ थीं। 44 यीशु को पकड़वाने वाले ने
एक इशारा दिया था, वह यह कि मैं जिस को
चूमूँ वही है। उसे पकड़ कर सुरक्षा के साथ
ले चलना।
45 वहाँ आते ही यहूदा ने यीशु को चूमा और
कहा, "गुरु जी।"
46 उन लोगों ने यीशु को पकड़ लिया।
47 पास खड़े लोगों में से एक ने अपनी
तलवार निकाली और वार कर दिया, जिस
से प्रधान पुरोहित के सेवक का कान कट
गया।
48 यीशु बोल उठे, "क्या जैसे चोर को
पकड़ा जाता है तुम लोग मुझे पकड़ने
तलवारों और लाठियों के साथ आए हो?"
49 प्रार्थना भवन में सदैव मैं सिखाया करता
था, उस समय तुमने मुझे नहीं पकड़ा। लेकिन
पवित्रशास्त्र[a] की बात पूरी होनी थी।
50 तभी सारे शिष्य वहाँ से भाग खड़े हुए।
51 एक जवान आदमी जो अपने बदन पर
कपड़ा डाले था, उनके साथ चल पड़ा। कुछ
जवानों ने उसे पकड़ना चाहा, 52 वह अपना
कपड़ा छोड़ भाग गया।
53 यीशु को प्रधान पुरोहित के पास ले जाया
गया। जहाँ सभी प्रधान पुरोहित बुज़ुर्ग अगुवे,
और शास्त्री इकट्ठे थे। 54 पतरस दूर से चला
आ रहा था। वह प्रधान पुरोहित के आँगन
तक पहुँचकर सेवकों के साथ बैठ आग
तापने लगा।
55 प्रधान पुरोहित और सारी सभा यीशु को
मौत की सज़ा सुनाने के लिए गवाही की
तलाश में थे, लेकिन वे कामयाब नहीं हुए।
56 बहुतों ने यीशु के खिलाफ़ झूठी गवाही दी,
लेकिन उनकी गवाही मेल नहीं खाती थी।
57 तब कुछ लोगों ने खड़े होकर झूठी गवाही
देते हुए कहा, 58 "हम ने उसे कहते सुना था,
"कि यह प्रार्थना भवन जिसे हाथ से बनाया

[a] 14.49 बाइबल

गया है मैं बर्बाद कर दूँगा, और मैं तीन दिन
में हाथों से न बनाया हुआ दूसरा बना दूँगा।"
59 इसके बावजूद भी उनकी गवाहियों में
समानता नहीं थी।
60 प्रधान पुरोहित ने खड़े होकर यीशु से
पूछा, "तुम्हारे खिलाफ़ आरोप लग रहे हैं,
तुम कुछ जवाब नहीं दे रहे हो"
61 यीशु खामोश रहे। प्रधान पुरोहित ने फिर
से पूछा, "क्या तुम मसीह हो, परम प्रधान के
पुत्र?"
62 यीशु बोले, "बेशक तुम मनुष्य के पुत्र
को सारे अधिकार के साथ और आकाश में
बादलों के साथ आते हुए देखोगे भी।"
63 तब प्रधान पुरोहित ने अपने कपड़े
फाड़ते हुए कहा, "अब हमें और किसी
गवाही की क्या ज़रूरत? 64 तुमने ईश निन्दा
सुन ली है, तुम्हारा क्या ख्याल है?" उन सभी
ने यीशु को आरोपी कहा और मौत की सज़ा
के लायक।
65 कुछ लोग यीशु पर थूकने लगे, कुछ
ने यीशु के मुँह को ढाँक, मारते हुए कहा,
"भविष्यवाणी करो"। अधिकारियों ने भी
यीशु को थप्पड़ मारे।
66 जब पतरस नीचे आँगन में था, प्रधान
पुरोहित की एक नौकरानी आयी। 67 पतरस
को आग तापते हुए देख वह बोल उठी, "तुम
भी तो यीशु नासरी के साथ थे।"
68 इन्कार करते हुए पतरस बोला, "तुम
कहना क्या चाह रही हो, मुझे समझ में नहीं
आ रहा है।" पतरस जब वहाँ से बाहर आँगन
में गया, तभी मुर्गे ने बाँग लगायी। 69 पतरस
को फिर से देख कर, वहाँ खड़े लोगों से वह
कहने लगी, "यह भी उन्हीं में से एक है।"
70 पतरस फिर मुकर गया। कुछ समय के
बाद, निकट खड़े हुए लोगों ने फिर पतरस से
कहा, "हो ना हो, तुम भी उन्हीं में से एक हो।
तुम गलीली हो और तुम्हारी बोली भी उन्हीं
की जैसी है।"
71 लेकिन पतरस कसम खा कर कहने
लगा, "जिस व्यक्ति के बारे में तुम कह रहे
हो, उसे तो मैं जानता भी नहीं।"
72 दूसरी बार मुर्गे ने बाँग दी। तब पतरस
को वह बात याद आयी, जो यीशु ने उससे
कही थी, इसके पहले कि मुर्गा दो बार बाँग
दे, तुम तीन बार मेरा इन्कार कर चुकोगे। यह
सोच कर वह रो पड़ा।

15 सुबह -सवेरे प्रधान पुरोहितों ने
बुज़ुर्ग, अगुवों और शास्त्रियों के
साथ सलाह मशविरा किया। फिर यीशु को
बान्ध कर, ले जाकर पिलातुस के सुपुर्द कर
दिया। 2 पिलातुस ने पूछा क्या तुम यहूदियों
के राजा हो? जवाब में यीशु ने कहा, "हाँ
ऐसा ही है।"
3 प्रधान पुरोहितों ने तमाम बातों में यीशु पर
दोष लगाया, लेकिन यीशु ने कोई उत्तर नहीं
दिया।
4 पिलातुस ने पूछा, "क्या तुम उत्तर दोगे?
देखो, तुम्हारे विरोध में क्या-क्या कहा जा
रहा है।"
5 इसके बावजूद यीशु ने उत्तर न दिया,
इसलिए पिलातुस आश्चर्य चकित था।
6 त्यौहार के समय पिलातुस जनता की
बिनती के अनुसार एक कैदी को मुक्त किया
करता था। एक कैदी का नाम बरअब्बा
था। 7 अपने साथी बलवईयों और हत्यारों के
साथ वह भी हिरासत में था। 8 जैसा पिलातुस
लोगों के लिए किया करता था, वैसी ही माँग
वे करने लगे।
9 पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या तुम चाहते
हो, कि यहूदियों के राजा को तुम्हारे लिए
मुक्त कर दूँ?" 10 उसे अच्छी तरह से मालूम

था, कि प्रधान पुरोहित ने ईर्ष्या के कारण
यीशु को उसके हाथ सौंपा था।
11 लेकिन प्रधान पुरोहित ने लोगों को
उकसाया कि वह बरअब्बा को यीशु की
जगह छोड़ दे। भीड़ ने चिल्लाकर वैसी ही माँग
की।
12 पिलातुस ने फिर कहा, जिसे तुम
यहूदियों का राजा कहते हो, "उसका मैं क्या
करूँ?"
13 वे सभी चिल्ला उठे, "उसे क्रूस पर
चढ़ाओ।"
14 पिलातुस ने पूछा, "क्यों? उसने बुरा क्या
किया है?" वे और ज़ोर से चिल्लाने लगे, "हाँ
उसे क्रूस पर चढ़ाओ।"
15 इसलिए लोगों को खुश करने के लिए
पिलातुस ने बरअब्बा को मुक्त कर दिया।
और यीशु को कोड़े लगवा कर उसने यीशु
को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सौंपा।
16 सिपाही यीशु को प्रीटोरियन हॉल की तरफ़
ले चले। उन्होंने पूरी रोमी फ़ौजी टुकड़ी
को भी बुलवाया। 17 उन लोगों ने यीशु को
बैजनी कपड़े पहनाए और काँटों का ताज
सिर पर रखा। 18 वे उसको प्रणाम करने लगे,
"यहूदियों के राजा, प्रणाम"। 19 उन लोगों ने
यीशु के सिर पर लाठी मारी, थूका और झुक
कर वन्दना की।
20 मज़ाक करने के बाद, वे यीशु का बैजनी
चोगा हटा कर उन्हीं के कपड़े पहिना कर
क्रूस पर चढ़ाने के लिए चल पड़े।
21 उन लोगों ने एक शमौन कुरेनी नामक
व्यक्ति जो अलेक्ज़ेन्डर और रूफ़ुस का
पिता था, मजबूर किया कि क्रूस उठा कर
ले चले। वह तो उसी रास्ते से सिर्फ़ गुज़र ही
रहा था।
22 यीशु को वे गुलगुता[a] तक ले गए।
23 उन्होंने यीशु को मुर्र मिली दाखरस पीने
को दी, लेकिन यीशु ने पीने से इन्कार कर
दिया।
24 जब वे उसे क्रूस पर चढ़ा चुके, पर्ची
डाल कर उन्होंने कपड़े बाँट लिए। 25 सुबह
नौ बजे उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया।
26 यीशु के लिए आरोप पत्र इस तरह का था:
"यहूदियों का राजा"। 27 यीशु की दोनों तरफ़
उन लोगों ने दो चोरों को, एक को बाएँ और
दूसरे को दायीं तरफ़ क्रूस पर चढ़ा दिया।
28 यह लेख, कि "यीशु अपराधियों के साथ
गिना गया" पूरा हुआ।
29 उस रास्ते से गुज़रने वाले लोग अपने
सिरों को हिला-हिला कर यीशु का मज़ाक
यह कह कर उड़ाते जा रहे थे, "मन्दिर के
ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले!
30 क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा
लो।"
31 इसी तरह से प्रधान पुरोहित भी शास्त्रियों
के साथ मिल कर आपस में ठट्ठा से कह रहे
थे, "इसने दूसरों को बचाया, लेकिन अपने
आप को न बचा सका"। 32 अब इस्राएल का
राजा और मसीह, क्रूस से नीचे उतर आए तो

[a] **15.22** खोपड़ियों के स्थान

हम देखें और विश्वास करें।" जिन्हें यीशु के साथ लटकाया गया था, उन्होंने भी यीशु की बेइज़्ज़ती की।

33 दोपहर बारह बजे आकाश में अँधेरा छा गया, जो दोपहर के तीन बजे तक रहा।

34 करीब तीन बजे यीशु ऊँचे आवाज़ में चिल्लाए, "इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी?" इसका मतलब है, मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?

35 पास में खड़े कुछ लोगों ने यह सुन कर कहा, "देखो, वह एलिय्याह को बुला रहा है।" 36 उन में से एक, दाखरस और सिरके में डुबोए हुए स्पंज को एक लकड़ी के सिरे पर रख कर उनको चुसाने के लिए उनकी तरफ़ दौड़ा और बोला, "उसे अकेला छोड़ दो। अब देखते हैं कि एलिय्याह आकर उसे नीचे उतारता है कि नहीं।"

37 तब यीशु ने ऊँची आवाज़ से चिल्लाकर अपनी जान दे दी।

38 प्रार्थना भवन[a] का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो हिस्सों में बँट गया।

39 जब वहाँ सामने खड़े सूबेदार ने यीशु को इस तरह से चिल्लाते और जान देते सुना तो, कहा, "यह आदमी सचमुच में परमेश्वर का बेटा था।"

40 कुछ दूरी पर कुछ खड़ी महिलाएँ देख रही थीं। उन में से मरियम मगदलीनी, योसेस और छोटे याकूब की माँ मरियम और शलोमी थीं। 41 जब यीशु गलील में थे तभी से ये यीशु के साथ रह कर उनकी सेवा किया करती थीं। इसके अलावा यरूशलेम से आने वाली अन्य महिलाएँ भी थीं।

42,43 अरिमतियाह का यूसुफ़ सभा का आदरणीय सदस्य था। वह परमेश्वर के राज्य का इन्तज़ार करता रहा था। उसने बड़ी हिम्मत के साथ सब्त के पहले वाला दिन, जो कि तैयारी का दिन था, शाम को आकर पिलातुस से यीशु की देह मांगी।

44 पिलातुस को यह आश्चर्य हुआ कि यीशु मर चुके थे। उसने सूबेदार को बुलाकर पूछा, कि यीशु ने कब प्राण छोड़ दिए। 45 सूबेदार से पूरी जानकारी हासिल करने के बाद पिलातुस ने यीशु की देह उसे दे दी।

46 उसने यीशु की लाश को उतार कर, अपने साथ लायी हुयी बढ़िया मलमल में लपेटा और चट्टान को खोद कर बनायी गयी कब्र में रख दिया। 47 मरियम मगदलीनी और यीशु की माँ मरियम देख रहीं थी, कि यीशु की लाश को कहाँ रखा गया।

16 सब्त के खत्म होते ही मरियम मगदलीनी और याकूब की माँ मरियम ने खुशबूदार पदार्थों को खरीदा, ताकि वे यीशु की लाश पर मल सकें। 2 सूरज निकलने पर ही था कि बड़े सवेरे, हफ़्ते के पहले दिन, वे कब्र पर पहुँची। 3 आपस में वे एक दूसरे से बोली, "हमारे लिए पत्थर को कब्र से कौन हटाएगा?"

4 वहाँ पहुँचने पर उन्होंने देखा कि पत्थर जो बहुत बड़ा था, पहले ही से लुढ़का हुआ है 5 भीतर जाने पर उन्होंने एक जवान को लम्बा सफ़ेद चोगा पहने दाहिनी तरफ़ बैठे देखा और बहुत डर गयीं।

6 उस व्यक्ति ने कहा, "डरो मत, तुम यीशु नासरी की तलाश में हो, जिन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया वह यहाँ नहीं हैं क्योंकि जी उठे हैं। यह जगह देखो जहाँ पर उनको रखा गया था। 7 तुरन्त यहाँ से जाकर उनके शिष्यों

[a] **15.38** मन्दिर

और पतरस को बताओ कि वह तुम से पहले गलील पहुँचेंगे। जैसा उन्होंने तुम्हें बतलाया था, तुम उन्हें वहाँ देखोगी।”

8 जल्दी कब्र से निकल कर वे दौड़ने लगीं, क्योंकि वे डर और आश्चर्य से भरी हुयी थीं।

9 सप्ताह के पहले दिन बड़े सवेरे जी उठने के बाद यीशु सब से पहले मरियम मगदलीनी से मिले, जिस में से यीशु ने सात भूतों को निकाला था। 10 जो लोग यीशु के साथ रहे थे लेकिन अब रो-धो रहे थे, उनको जाकर उसने बताया। 11 जब उन्हें पता लगा कि यीशु ज़िन्दा हैं और उसने यीशु को देखा भी है फिर भी विश्वास नहीं किया।

12 इसके बाद यीशु दूसरे रूप में उन दो को दिखे जो नगर के बाहरी इलाके में चले जा रहे थे। 13 दोनों ने भी जाकर बाकी लोगों को बताया, लेकिन उन्होंने भी विश्वास नहीं किया।

14 ग्यारह शिष्य जब खाना खाने बैठे हुए थे, यीशु अचानक उपस्थित हो गए और उन्हें उनकी मन की कठोरता और अविश्वास के लिए डाँटा। इसलिए कि यीशु के जी उठने के बाद देखने वालों की बात पर उन्होंने विश्वास नहीं किया था।

15 यीशु बोले, “सारी दुनिया में जाकर सभी लोगों को खुशी की खबर दो। 16 जो विश्वास लाएगा बपतिस्मा लेगा, मुक्ति पा जाएगा। लेकिन जो विश्वास नहीं लाएगा, सज़ा से मुक्त नहीं हो पायेगा। 17 जो लोग भरोसा[a] करेंगे, उन में ये निशान होंगे। 18 वे अन्य भाषा बोलेंगे, चाहे साँप उनके हाथ में लिपट जाए और कोई उन्हें ज़हर भी दे दे, उनका कुछ नुकसान नहीं होगा वे लोग बीमार लोगों पर हाथ रखेंगे और बीमार लोग अच्छे हो जाएँगे।”

19 उन लोगों से बातचीत करने के बाद यीशु को ऊपर उठा लिया गया और तब से वे परमेश्वर के अधिकार के साथ वहाँ हैं। 20 शिष्य वहाँ से निकल कर सब जगह जाने लगे। और यीशु उन लोगों के साथ चिन्हों को दिखा कर अपनी सच्चाई का सबूत देते रहे।

---

[a] **16.17** विश्वास

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com